मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

ब्याज की निंदा

"अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने फ़रमाया:
अल्लाह का अभिशाप है
ब्याज लेने वाले पर, ब्याज देने वाले पर,
इसके लिखने वाले पर
और इसकी गवाही देने वाले पर।"
(मुस्लिम शरीफ़)

₹10/-

Sep.13

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

ब्याज और ज़कात में अन्तर

"ब्याज से समूह का धन कुछ लोगों के पास एकत्रित हो जाता है। समूह, सामूहिक रूप से निर्धन और परेशान होता है, और व्यक्ति, व्यक्तियों के रूप (चाहे वह अपने समूह कम्पनियां और संस्था बना लें।) में क़ारून बन जाते हैं। पूंजीपतियों और धनवानों का थोड़ा सा धन जिस से ब्याज का व्यापार प्रारम्भ कर देते हैं। सारा समूह और पूरे शहर या मुल्क के निजी धनों को इस प्रकार खींच लेती हैं जिस प्रकार अलिफलैलह का चुम्बकीय पहाड़ जहाज़ो और कशतियों को जोड़ अन्द और कीलों को खींचकर उन तख्तों और यात्रियों को डूबने के लिए छोड़ दिया करता था। वह उनके धन कमाने के साधनों और उन के समय और शक्ति पर अधिकार करते हैं। और बिना किसी परिश्रम और बिना किसी उचित विनिमय के रूपये से रूपया पैदा कर लेते हैं और इस तरह उनका पैसा फिरने और फैलने के बजाए एक स्थान पर फलता रहता है। ज़कात और ब्याज का यही भारी अन्तर है। ब्याज खाना और पूंजीवादी व्यवस्था में कुछ व्यक्ति धन और धन के साधनों के मालिक बन जाते हैं। और दूसरे लोग जीवन के साधनों तक से वंचित हो जाते हैं। लेकिन यह इन लोगों की वास्तविक खुशहाली नही है। कोई व्यक्ति या कुछ व्यक्ति किसी समूह में अकेले खुशहाल नही हो सकते। जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी जंगल में या अकेला शहरी जीवन व्यतीत नही कर सकता। ज़कात का रूपया समूह को खुशहाल करता है और ब्याज समूह को निर्धन, कंगाल बनाकर एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों को बहुत बड़ी दौलत का मालिक बना देता है। ज़कात वह बीज है जो ज़मीन में पड़कर एक दाने से सैकड़ों दाने तक पैदा कर देता है और ब्याज दूसरों की खेतियों को काटकर उन को दाने दाने का मोहताज बना देता है। और एक व्यक्ति के खलियान को भर देता है। ज़कात और सूद के इस अन्तर को कुरआन ने अपनी चमत्कार की शैली में इस प्रकार वर्णन किया है:

يمحق الله الرباويربي الصدقٰت والله لا يحب كل كفار أثيم

(अल्लाह मिटाता है ब्याज को और बढ़ाता है ख़ैरात को और नही पसंद करता किसी अकृतज्ञ पापी को।)"

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

मालियात का इस्लामी निज़ाम

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

सितम्बर २०१३ ई०

अंक:९ वर्ष:५

इस अंक में:

ब्याज का अभिशाप.....३
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ईमान व अक़ीदा हमारा सबसे क़ीमती सरमाया.....४
शमसुल हक़ नदवी

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक..... ५
जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

हॉलोकास्ट क्या है.....७
डॉक्टर साजिद ख़ाक़वानी

इतिहास बोलता है.....१०
अब्दुल हफ़ीज़ इस्लामी

ईदुल अज़्हा के फ़ज़ाएल और क़ुर्बानी के एहकाम और मसाएल.....१३
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

फ़ासिस्ट राजनीति को समझना बहुत ज़रूरी है.....१६
जनाब दिग्विजय सिंह

मध्य पूर्व का बदलता राजनीतिक दृष्टिकोण.....१८
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

इरशादात जीलानी रह०.....२०
मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह०)

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रति अंक–10रू वार्षिक–100रू०
सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org
FAX-0535-2211386
E-Mail: markazulimam@gmail.com

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली.यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफ्सेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

ब्याज का अभिशाप

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद सल्ल0 के आने से पहले के अज्ञानता के युग में खून जिस प्रकार अल्पमूल्यित था एंव जान का कोई मूल्य न था इसी प्रकार वह धन दौलत के सन्दर्भ में भी असंतुलित था। एक अमीर इन्सान ग़रीबों का खून चूस–चूस कर अपने अमीरी ठाठ–बाठ बढ़ाता था। निर्धनों के लिए इस सम्पूर्ण संसार में कोई भी नही था जो उनकी निर्धनता पर तरस खा सके। इस युग की पूंजीवादी व्यवस्था ऐसी बुनियाद पर स्थित थी जिसमें अत्यधिकता एंव असंतुलन था। ब्याज के व्यापार को इसकी रीढ़ की हड्डी माना जाता था। ये समस्या केवल निर्धनों तक सीमित न थी अपितु विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पूंजीवादी असंतुलन का यह रूप प्रचलित था। प्राचीन भारत में "कौटिल्य" की व्याख्या के अनुसार 60 प्रतिशत तक ब्याज का मूल्य वैध एंव सही माना जाता था। बाद में भारत ने इसे अत्याचारी मूल्य घोषित कर दिया एंव इसमें कमी कर दी। सोलहवीं शताब्दी के इंग्लिशतान में ब्याज का 10 प्रतिशत मूल्य प्रचलित था। यूरोप में भी आठ प्रतिशत मूल्य चलन में था। लेकिन बाद में इसे अधिक घोषित करके इसमें कमी कर दी गई। सर्वप्रथम इस्लाम ने आकर पूर्णरूप से इसे अत्याचारी व्यवस्था घोषित कर दिया एंव इसको जड़ से उखाड़ फेंका। अन्तिम सन्देष्टा सल्ल0 ने अपने अन्तिम अभिभाषण में स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी कि (और अज्ञानता के युग में जो ब्याज की व्यवस्था थी उसे समाप्त किया जाता है) और यह भी स्पष्ट किया गया (तुम्हारे लिए ऋण केवल मूलधन है, न तुम अत्याचार करो और न अपने ऊपर अत्याचार होने दो) यह स्पष्ट कर दिया गया कि जो ऋण दिया गया है वह ऋण देने वाले का स्वय का अधिकार है कि वह उसे मिलेगा। परन्तु इस पर ब्याज चलन में रहा है जिसे समाप्त किया जाता है। अब इसकी याचना नही की जा सकती है।

यहां पर ग़ौरतलब है कि आप हज़रत मोहम्मद सल्ल0 ने सर्वप्रथम अपने घर से यह कार्य प्रारम्भ किया और कहा(और मैं सर्वप्रथम अपने खानदान के अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज समाप्त करता हूँ। ये सब अब समाप्त हैं)

कुरआन में ब्याज का व्यापार करने वालों को जितनी कठोर रूप से मना किया गया है, वह किसी अन्य व्यापार में नही मिलता है कहा गया है। (ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो यदि तुम ईमान रखते हो तो जो ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो। यदि तुम ऐसा नही करते हो तो अल्लाह एंव उसके रसूल से युद्ध के लिए तैयार हो जाओ)

ब्याज के आधारभूत दो रूप होते हैं। पहला रूप, जिसका वर्णन उपरोक्त आयत में था इस को आप सल्ल0 ने अधिक स्पष्ट किया और कहा (हर वह ऋण जिस से लाभ प्राप्त हो, वह ब्याज है) ब्याज के दूसरे रूप का वर्णन केवल हदीस में आता है जिस का सारांश यह है कि जिन मालों में ब्याज सम्मिलित हो रहा हो इन का उधार क्रय–विक्रय किया जाए या इन्ही मालों में से एक प्रकार की चीजों को कम या ज़्यादा करके क्रय–विक्रय किया जाए।

आज सबसे अधिक ब्याज का वह रूप प्रचलित है जिसे कुरआन में स्पष्ट रूप से हराम घोषित कर दिया गया है एंव हदीस में इसके शामिल होने के शक से भी मना किया गया है। एक हदीस के शब्द ये हैं (ब्याज एंव इसकी गुंजाइश को भी त्याग दो) वर्तमान समय में बैंक का ब्याज भी ब्याज के इसी रूप में सम्मिलित है। आप सल्ल0 ने केवल ब्याज लेने वालों पर ही अभिशाप नही किया। हदीस के शब्द हैं (अल्लाह का अभिशाप है ब्याज लेने वालों पर, देने वालों पर एंव इसके गवाहों पर) एक हदीस में इतने कठोर शब्द आएं हैं कि सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कहा गया कि "ब्याज की सबसे निम्न श्रेणी अपनी माँ से अवैध संबंध स्थापित करने के बराबर है।" इन हदीसों में प्रेरणा का पाठ है उन लोगों के लिए जो किसी भी प्रकार ब्याज में सम्मिलित हैं। और जो खुलकर ब्याज का व्यापार करते हैं और उस को बुरा भी नही समझते तो इनका

ईमान ही खतरे में है। इसलिए कि जो कुरआन मजीद के किसी भी आदेश का इंकार करते हैं इस के बाद कोई नेकी क़ाबिले कुबूल नही है।

वास्तव में ब्याज पूंजीवादी व्यवस्था में सर्वाधिक बुरा व्यापार है। जिसमें धन संचित होता जाता है मनुष्यों के स्तर पर, क्षेत्रीय स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर एंव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर। यह खून चूसने वाली व्यवस्था जारी है। एक साहूकार जिसको सबसे अधिक मजबूर समझता है उसी से ज़्यादा ब्याज वसूलता है। अमीर अपनी दौलत को बढ़ाता है और इसका ज़रिया ग़रीबों की खून पसीने की कमाई को बनाता है।

गौरतलब है कि पूरी दूनिया जिस तरह पूंजीवादी असंतुलन से ग्रसित है इसका आधारभूत कारण ब्याज लेने–देने की व्यवस्था है। अगर ब्याज की व्यवस्था समाप्त कर दी जाए और इस्लामी व्यवस्था ज़कात देना प्रचलित किया जाए तो पूरी दुनिया में एक भी निर्धन न दिखेगाा। लेकिन ब्याज के कारण जिस तरह ग़रीबों का खून चूस–चूस कर दौलत बढ़ाई जा रही है और इस का संचय हो रहा है यह सम्पूर्ण विश्व के लिए ख़तरे की घण्टी है। ब्याज का मूल्य कितना ही कम कर दिया जाए अत्याचार तो अत्याचार ही है। इस को भी इन्साफ नही कहा जा सकता है। नबी सल्ल0 ने पूरी दुनिया के लिए जो कृपा की व्यवस्था प्रस्तुत की है उसमें ब्याज के अभिशाप को सदा के लिए ख़त्म कर दिया गया है। वास्तव में विश्व की पूंजीवादी व्यवस्था के लिए आप सल्ल0 का अरफ़ात के भाषण का यह संदेश पूर्णता कृपालू है।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ पर कुरआन का असर

"हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ सलफ़ सालेहीन में से एक निहायत मशहूर बुजुर्ग और बाकमाल सूफ़ी गुज़रे हैं। उनके इस्लाम लाने का वाक़या यूं लिखा है कि वो डकैती में मशहूर थे और एक औरत से उनको इश्क़ भी था। डाके का माल उसी को दिया करते थे। एक बार डाके के लिये एक क़ाफ़िले पर गये, वहां एक शख़्स कुरआन पढ़ रहा था, छिप कर सुनने लगे:

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَن تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ

"क्या वक़्त नहीं पहुंचा ईमान वालों को कि गिड़गिड़ावें उनके दिल अल्लाह की याद के लिये और उसके लिये जो हक़ से उतरा और उन लोगों की तरह न हो जायें जिन्हें पहले किताब दी गयी फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, तो उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें बहुत से नाफ़रमान हैं।" (सूरह हदीद: 57:60)

हज़रत फ़ुज़ैल दीवानों की तरह चीख़ मारकर दौड़ने लगे और अपनी हालत पर बहुत ज़्यादा शर्मिंदा हुए और तमाम ख़ुराफ़ात से तौबा करके फ़ौरन ईमान ले आये। बाक़ी की ज़िन्दगी तक़वे व इताअत में गुज़ारी।"

कुरआन पाक की तिलावत सुनकर एक यहूदी का कुबूल–ए–इस्लाम

अल्लामा क़ौतोशजी एक ज़बरदस्त आलिम थे। मगर कुरूप थे। एक बार एक यहूदी आलिम से उनसे एक महीने तक मुनाज़रा होता रहा। यहूदी आलिम ने अल्लामा की किसी पेश की हुई दलील को तस्लीम न किया। एक रोज़ यही यहूदी आलिम अल्लामा क़ौशजी के पास ऐसे वक़्त में आया जबकि वो कुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे। यहूदी आलिम दरवाज़े के पास खड़ा होकर कुरआन सुनने लगा। कुरआन–ए–अज़ीज़ ने उसके दिल पर ऐसा असर किया कि ज़्यादा देर उससे सब्र न हो सका। उसी वक़्त अल्लामा की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम में दाख़िल हो गया। अल्लामा कौशजी ने आज आपको कौन सा ऐसा दाइया पेश आया जो आप इस्लाम लाने पर मजबूर गये। यहूदी आलिम ने कहा कि कुरआन अज़ीज़ ने मेरे दिल पर ऐसा असर किया कि मुझे यक़ीन हो गया कि ये अल्लाह का कलाम है।

अबू मक़ना ने कहा कि जब मैने कुरआन के एतराज़ में लिखना शुरू किया तो इस दौर में मेरा गुज़र एक ऐसे बच्चे की तरफ़ हुआ जो ये पढ़ रहा था:

"ऐ ज़मीन अपना पानी पी ले और ऐ आसमान थम जा, और पानी का चढ़ाव उतर गया और हादसा अन्जाम पा गया।"

इस आयत को सुनते ही मैंने जो कुछ लिखा था मिटा दिया और कहा कि गवाही देता हूं इस बात की कि कुरआन ऐसा कलाम नहीं है कि जिस पर एतराज़ किया जा सके और न ही बशर का कलाम है।

ईमान व अक़ीदा

हमारा सबसे क़ीमती सरमाया

शमसुल हक़ नदवी

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने एक भाषण में कहा था, "वर्तमान भारत में हालात इस बात की गवाही दे रहे हैं कि आगे आने वाले दस वर्षों के बाद यहां की दुनिया कुछ और ही होगी। हमारे बच्चे इस्लाम से बेगाना हो चुके होंगे, अल्लाह का क़ानूने क़ुदरत है कि जिस चीज़ के दाने डाले जायेंगे, उसी की खेती होगी। इस समय हमारे बच्चों के ज़हन में जो दाने डाले जा रहे हैं वो हिन्दु, ब्रह्मियत और देवमालाई संस्कृति जो दिल व दिमाग़ की ज़मीन में डाले जा रहे हैं।"

हमारी नई नस्ल को दीन–ए–इस्लाम से बेगाना रखने और ख़ालिस बुतपरस्ती के रास्ते पर ले जाने के जो मन्सूबे बनाये गये हैं, और हमारे मुल्क के स्कूलों और कालिजों का जो कोर्स तैयार और जारी किया गया है, और उसके जो असर हमारी नयी नस्ल पर पड़ रहे हैं, इस सिलसिले में दीनी तालीमी कौन्सिल बराबर सचेत करती रही है और लेख भी ख़ासकर निदाये मिल्लत और तामीर–ए–हयात छापते रहे हैं, जिनके नयी नस्ल के दीन से बेगाना होने और बेगाना बनाने की एक हल्की सी तस्वीर सामने आ जाती है जबकि मामला इस तस्वीर से कहीं ज़्यादा संगीन और भयावह है। रही सही कसर अब दीनी व अरबी मदरसों में पाबन्दी लगाकर पूरी करने का मंसूबा बनाया गया है। ये हालात वो है जिनको इमरजेंसी और हंगामी हालात से ताबीर किया जा सकता है और ये सब जानते हैं कि हंगामी हालात में इन्सान सबकुछ छोड़कर उनसे बचाव और रक्षा की कोशिश में लग जाता है। अपना ऐश व आराम और खाना–पीना सब भूल जाता है। इस वक़्त हम जिन नाज़ुक हालात से दो–चार हैं, हमें अपने उलमा और लीडरों की रहनुमाई में हमसे जिस कुर्बानी की मांग की जाये, उसके लिये तैयार होना चाहिये। बक़ौल एक लेखक व क़ौम के दर्दमन्द के इस वक़्त के हालात फ़ित्ना–ए–अकबरी से ज़्यादा ख़तरनाक हैं। अब मिल्लत–ए–इस्लामिया हिन्दिया को ये फ़ैसला करना है कि वो अपनी नयी नस्ल को कुफ़्र वल हाल के हवाले कर देगी या उस फ़ित्ने से बचाने के लिये वो हर वो कुर्बानी देने के लिये तैयार हो जायेगी जिसकी हमारे उलमा हमसे मांग करेंगे। इस वक़्त की एक सबसे बड़ी आज़माइश अरबी मदरसों पर लेबर एक्ट का लागू करना, और मदरसों व मकतबों को सरकारी मदद की पेशकश, और उनमें बदलाव लाने के ख़तरनाक मशवरे हैं।

सरकारी मदद क़ुबूल कर लेने का अन्जाम बिहार राज्य में प्रकट हो चुका है। वहां के दीनी मदरसों की सारी व्यवस्था छिन्न–भिन्न होकर रह गयी है। मदरसे की रूह निकल चुकी है। अपने बच्चों को दीनी तालीम दिलाने का शौक़ रखने वाले माता–पिता परेशान हैं कि उनको तालीम के लिये किसके हवाले करें। चुनान्चे अब वहां के बच्चे शुरूआती और मकतब की तालीम के लिये यूपी और दूसरे राज्यों की ओर कूच कर रहे हैं। ये तो मदरसों का हाल हुआ है और खुद मदद लेने वालों का हाल ये है कि उनको कई–कई महीनों की तनख़्वाहें नहीं मिलतीं हैं, उनका सारा वक़्त आज के रायज विरोध प्रदर्शनों व धरना देने में ख़र्च हो रहा है। वो इस वक़्त "दीन व दुनिया दोनों से गये" की जीती जागती तस्वीर बने हुए हैं।

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे

बिहार की स्थिति अपनी जुबान से अपना हाल यूं कह रही है: "देखो मुझे जो दीदा–ए–इबरत निगाह हो।"

लिहाज़ा हमारे वो मदरसे व मकतबे जो इस वक़्त सरकारी मदद लेने से महफ़ूज हैं, वो सरकारी मदद न कुबूल करें। जिस तरह उन्होनें अब तक त्याग व कुर्बानी से काम लिया है और दो–दो, चार–चार रूप्ये के चन्दे से इस महाज़ को संभाला है। अब भी इसी पर क़ायम रहें कि इसी में ईमान व अक़ीदे की ख़ैर है। ये सरकारी पेशकश वो दज्जाली जन्नत है जो देखने में खुशनुमा मालूम हो रही है, लेकिन उसके अन्दर की गर्मी दीन व अक़ीदे को जलाकर रख देती है। इसका पूरा ख़्याल रहे कि कहीं हमारा शुमार उन लोगों में न हो जाये जिनके बारे में कहा गया है "दुनिया के मामूली फ़ायदे के लिये अपने दीन को बेच देता है।"

हम मुसलमान हैं। हमारा अक़ीदा है कि हमारी अस्ल ज़िन्दगी आख़िरत की ज़िन्दगी है।..... (शेष पेज 9 पर)

जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

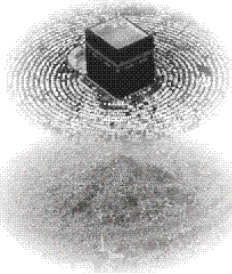

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक

रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ें, साल में महीने भर के रोज़े, साल गुज़रने पर माल के चालिसवें हिस्से की ज़कात, इस्तेतात रखने पर हज की सआदत, ये हैं वो चार सुतून जिन पर इस्लाम की इमारत क़ायम है। कलिमा शहादत का ज़िक्र नहीं। वो तो इन बुनियादों की भी बुनियाद है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर अक़दस स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः "इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर हैं, 1– दिल सइ इस बात का इक़रार करना और ज़बान से इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद स0अ0 उसके बन्दे और रसूल स0अ0 हैं 2– पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना 3– ज़कात देना 4– मुस्ततीअ के लिये हज करना और 5– रमज़ान के रोज़े रखना।"

हज इस्लाम का वो हिस्सा है, जिसने अपनों ही को नहीं ग़ैरों को भी प्रभावित किया है। इसके ज़ाहिरी फ़ायदे, इज्तमाई मसालेह और रूह परवर मन्ज़रों पर इस्लामी दुनिया ही नहीं, ग़ैर इस्लामी दुनिया ने सैकड़ों नहीं, हज़ारों बार रश्क किया है, और क्यों न करे। त्योहार वो भी मनाते हैं, यात्रांए उनकी भी निकलती हैं, नुमाइश उनके यहां भी लगती है, मेलों–ठेलों का सिलसिला उनके यहां भी चलता है, भीड़ उनके यहां भी नज़र आती है, पूजा–पाठ उनके यहां भी होता है, धार्मिक स्थलों पर हाज़िरी उनके यहां भी दी जाती है, लेकिन क्या कहीं जोड़ नज़र आता है। इनमें से किसी चीज़ का हज के दिनों से, हज के अरकान की अदायगी से, मिना में क़याम से, अरफ़ात की हाज़िरी और रोने–धोने से, मुज़दलिफ़ा की रात से, दस–बीस नहीं चालिस–चालिस लाख लोगों के एक साथ स्थानानतरण से, काबा के साये में पढ़ी जाने वाली नमाज़ से, हजरे असवद को बोसा देने की बेक़रारी से, रोज़ा–ए–अक़दस पर पढ़े जाने वाले दरूद व सलाम से और गुम्बदे ख़िज़्रा को देखकर दिन पर पड़ने वाले असर से!

हाजी के दिल की कैफ़ियत को छोड़िये, उसके एहसासों व जज़्बातों को जाने दीजिये, वो तो सिवाये ख़ुदा के कोई जान नहीं सकता, हाजी उसी ख़ुदा का तो मेहमान है। हां आप उसके ज़ाहिर पर ज़रूर नज़र डाल सकते हैं और उससे उसके अन्दर की कैफ़ियत का अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

आप नज़र डालिये एहराम की सफ़ेद उजली चादर पर, चादर के अन्दर छिपे हाजी के पाक व साफ़ जिस्म पर, उसके लरज़ते होंटों से निकलते तलबिया के शब्दों पर, दुआ के उठे उसके कंपकपाते हाथों पर, दुआ के मौक़े पर क़ायम ख़ुदा और उसके बन्दों के रिश्ते पर, आह व बक़ा के साथ मांगी जाने वाली दुआ पर जो सिर्फ़ अपने लिये नहीं, अपने बेटों के लिये नहीं, अपने रिश्तेदार के लिये नहीं, अपने मुसलमान भाइयों के लिये नहीं बल्कि पूरी इन्सानी दुनिया के लिये, जो दुनिया से जा चुके हैं उनके लिये भी और जिनको आना है उनके लिये भी, क्या इसकी मिसाल किसी मज़हब में, किसी मज़हबी मौक़े पर, किसी मज़हबी जगह पर मिलती है?

1– ख़ुदा के इस मेहमान को पहला जो हुक्म ख़ुदा की तरफ़ से मिलता है वो लैंगिक इच्छापूर्ति की बातों की मनाही का है, इशारे व किनाये से भी। हज के मौक़े पर जायज़ लैंगिक विचार भी ज़बान पर न लाया जाये, ये हुक्म कुरआन करीम में सराहत के साथ दिया गया है।

2– दूसरा हुक्म रब्बे करीम की तरफ़ से छोटे–बड़े सभी गुनाहों से बचने का है। रोज़ा की तरह एहराम की हालत में बहुत से जायज़ काम नाजायज़ हो जाते हैं। जैसे शिकार करना, जूं मारना, पत्ती तोड़ना तो फिर छोटे या बडे गुनाह की गुंजाइश हज के मौक़े पर कहां से निकल

सकती है। वो तो आम दिनों में भी हराम थी। हज के दिनों में तो इसकी हुरमत और बढ़ जाती है।

3– तीसरा हुक्म ख़ुदा के घर के मेहमान को बहस से बचने का है। मारपीट–हाथापाई तो अलग रही, ज़बानी बहस व तकरार जिसका इमकान भीड़ के इस मौक़े पर बहुत बढ़ जाता है, हज के दिनों में ख़ासतौर पर इसको मना कर दिया गया है।

4– चौथा हुक्म जो हाजी को इस मौक़े पर परवरदिगारे आलम की ओर से मिलता है, वो ख़ुदा से डरते रहने का है, क्योंकि यही वो डर है जो इसको शहवानी तज़किरों से बचायेगा, गुनाहों से महफ़ूज़ रखेगा और बहस व मुबाहसा और बेकार की बातों से इसको दूर रखेगा।

5– पांचवा हुक्म जो हज की आयतों के ज़िमन में बार–बार हाजी को दिया गया है वो है ख़ुदा को याद करने, उसकी नेमतों का तज़किरा करने और उसके एहसानों को ज़िक्र करने का। जिस ख़ुदा ने आपको हज की तौफ़ीक़ दी, साधन उपलब्ध कराये, सफ़र को आसान किया, रुकावटों को दूर किया, गुनाहों में लत–पत अपने जिस्म को अपने घर में हाज़िरी की इजाज़त दी। सरकशियों, बग़ावतियों और नाफ़रमानियों के बावजूद अपना मेहमान बनाकर इज़्ज़त बख़्शी, उस ख़ुदा का ख़्याल हर लम्हा दिल में रहे। उसका ज़िक्र हर वक़्त ज़बान पर रहे। न इसके अलावा किसी की याद आये, न उसके सिवा ज़बान पर किसी का ज़िक्र आये, न उसके अलावा दिल में किसी का ख़्याल आये।

आख़िरी बात मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह0 की ज़बानी, "हज के मौक़े पर दुनिया के कोने–कोने की आबादी ख़िंच कर आ जाती है। हर क़िस्म, हर उम्र, हर क़माश, हर मिज़ाज के लोग होते हैं, बूढ़े भी, जवान भी, बच्चे भी बड़े भी, तेज़ मिज़ाज भी और ग़ुस्सावर भी, आवारा मिज़ाज भी हरीस व मतामे भी, हसीन और नौजवान औरतें भी, फिर राह और सवारी के सिलसिले में तरह–तरह की तकलीफ़ें, फिर ज़बानों का अलगाव, वो उनकी नहीं समझते ये इनकी नहीं समझते, बड़े–बड़े सब्रदार भी इस मौक़े पर सब्र का दामन छोड़ देते हैं, रश्क व मुनाफ़िक़त, बदनज़री व बदकारी, नज़ाअ व जिदाल के मौक़े क़दम–क़दम पर रखे होते हैं।"

तो ऐसे मौक़े पर अगर कोई चीज़ आपके सफ़र को कामयाब और आपके हज को इन्दल्लाह मक़बूल बना सकती है तो वो यही ख़ुदा का डर है। उसकी याद और उसका ज़िक्र है, इच्छापूर्ति के विचारों और बातों से बचना, गुनाहों से दूर रहना और बहस व ज़बानी झगड़ों से बचना, जिस्म और एहराम की पाकी के साथ–साथ हमको ज़बान भी पाक रखनी है, निगाह भी पाक रखनी है, दिल भी पाक रखना है, ख़्याल भी पाक रखने हैं, तब ही हम हज से इस तरह गुनाहों से पाक–साफ़ होकर लौटेंगे जिस तरह मां के पेट से गुनाह की आलाइश से पाक बच्चा पैदा होता है।

हज का ये सफ़र उम्र में एक ही दो बार पेश आता है। बक़िया तीन अरकान रोज़ा, नमाज़, ज़कात अगर उम्र ने वफ़ा की, सेहत तन्दरुस्ती ने साथ दिया और आमदनी के ज़रिये ने धोखा न दिया तो उन तीनो अरकान की अदायगी के मौक़े ज़िन्दगी में बार–बार आयेंगे लेकिन इस चौथे रुक्न की तलाफ़ी का इमकान बहुत कम बाक़ी रहता है क्योंकि सब कुछ होते हुए भी इन्सान बाज़ वक़्त हज की सआदत से महरूम रह जाता है। अगर ख़ुदा के फ़ज़ल व करम से हज कामौका आपको मिल रहा है तो उसके आदाब का पूरा ख़्याल रखिये। नियतों का दुरूस्त कीजिये और रिज़ाए ईलाही के अलावा किसी और का ख़्याल दिल में हरगिज़ न लायें। और मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की हुरमत का पूरा लिहाज़ रखिये।

ख़ुदा हज के इस सफ़र को आसान फ़रमाये। हज को क़ुबूल फ़रमाये। आफ़ियत व सलामती के साथ घर वापस लाये और ज़िन्दगी भर इस हज की बरकतों से हमको नवाज़ता रहे।

हज का बदला

عن ابی هريرة رضی اللهعنه قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم:

"العمرة الی العمرة كفارة لما بينهما والحج المبرور ليس له جزاء الا الجنة".

(بخاری ابواب العمرة:١٧٧٣– مسلم كتاب الحج: ٣٢٨٩)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने फ़रमाया: "एक के बाद दूसरा उमरा उनके बीच गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है और हज–ए–मबरूर का बदला सिर्फ़ जन्नत है।"

हॉलोकास्ट क्या है?

डाक्टर साजिद ज़ाक़वानी

हॉलोकास्ट यहूदियों से संबंधित दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान सबक़ देने वाली घटनाओं का एक संग्रह है। यहूदी वो क़ौम हैं, जिनके बारे में दुनिया के किसी कोने में कोई अच्छी राय नहीं पायी जाती। शेक्सपियर जैसे ड्रामा लेखकों ने भी "शॉयलाक" नामी सूदख़ोर और नंग इन्सानियत किरदार को यहूदी धर्म का पीराहन पहनाया है। कुरआन मजीद ने यहूदियों पर सबसे बड़ा इल्ज़ाम धरा है कि वो नबियों के क़ातिल हैं और हद तो ये है कि उन यहूदियों ने मोहसिन–ए–इन्सानियत स0अ0 को क़त्ल करने के इरादे से भी परहेज़ नहीं किया। दुनिया पर मुसलमानों के एक हज़ार साल के शासन में यहूदी बहुत आफ़ियत में रहे और ये दौर ख़त्म होते ही उन्होंने अपनी साज़िशों का निशाना मुसलमानों को ही बनाया और फ़िलिस्तीनियों की कमर में छुरा घोंपा। दुनिया की हर क़ौम उनकी पर्दे के पीछे की ज़हनियत से परिचित है और उन्हें अपने से दूर रखना चाहती है। इसीलिये पश्चिमी क़ौमों ने उन्हें अपने यहां जगह देने के बजाये मुसलमानों के सर ला थोपा। उनकी ज़हनियत, उनका इतिहास, उनके विश्वास और उनका अन्जाम कुरआन की इस आयत का प्रतिविम्ब हैं "हमने उन पर ज़िल्लत और मसकनत थोप दी है।"

"हॉलोकास्ट" यूनानी शब्द से लिया गया है जिसका मतलब "मुकम्मल तौर पर आग के हवाले कर देना" इससे मुराद यहूदियों का ये दावा है कि लगभग यूरोपीय बनी इस्राईलियों को विश्व युद्ध के दौरान क़त्ल किया गया, जिसका इल्ज़ाम नस्लकुशी के तहत नाज़ी जर्मनों पर लगाया जाता है। कुछ खोज करने वालों के निकट "हॉलोकास्ट" से मुराद केवल क़त्ल किये गये यहूदी नहीं हैं, बल्कि दूसरे विश्व युद्ध में क़त्ल किये गये वो सारे लोग जो इत्तेफ़ाक़ से क़त्ल नहीं हुए, बल्कि जर्मन नाज़ियों ने किसी साज़िश के तहत बाक़ायदा उन्हें क़त्ल किया है, जिनमें दूसरे धर्मों के चिन्हित धार्मिक मार्गदर्शक, जंग के क़ैदी, समलैंगिकता के दौरान मर्द और दूसरे अस्करी व राजनीतिक विरोधी भी शामिल हैं। इस परिभाषा के तहत हॉलोकास्ट के मृतकों की संख्यां एक करोड़ जा पहुंचती है। इन दोनों राय में कौन सी राय बेहतर है?यहूदी सच बोलते हैं या दूसरे खोजी?और क्या यहूदियों ने दुनिया की हमदर्दियां हासिल करने के लिये और स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिये दूसरे मृतकों को भी अपना तो नहीं बना लिया? ये अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

सहयूनियों के अनुसार दूसरे विश्व युद्ध के सालों पहले से यहूदियों को सोल सोसाइटी से नाबोड करने की योजनाएं बन रही थीं। सन् 1930 ई0 की दहाई में ऐसे–ऐसे क़ानून बनाये गये कि धीरे–धीरे यहूदियों के आर्थिक, सामाजिक व क़ानूनी अधिकार मान्द पड़ने लगे और उन्हें जर्मन यूरोपीय समाज में अकेला किया जाने लगा। इन क़ानूनों का उद्देश्य यूरोपीय यूरोप को ग़ैर यूरोपियों से पाक करना था। 1933ई0 में इन क़ानूनों का एक संग्रह पास किया गया जिनके अनुसार अहम इलाक़ों और उच्च पदों का यहूदियों से ख़ाली करा लिया गया। अतः कृषि फ़ार्मों में यहूदी कृषकों से लेकर कचहरियों में यहूदी वकीलों और यहूदी जजों तक को बाहर निकाल दिया गया और उन्हें बुरी तरह मारा–पीटा गया। स्कूलों, कॉलिजों और अख़बारों के दफ़्तरों और विभिन्न संस्थाओं से भी उन्हें कानून के अन्तर्गत निकाला गया। 1935 ई0 में हिटलर ने एक भाषण के द्वारा यहूदियों को रहे–सहे तमाम सोल अधिकारों से भी वंचित कर दिया। यहूदियों के ख़िलाफ़ नाज़ियों का आरम्भ था।

इस उद्देश्य की ख़ातिर ऐसे कैम्पस बनाये गये जहां यहूदियों को गुलाम बनाकर ले जाया जाता और उनसे इतनी मेहनत करायी जाती कि वो थकाकर मार दिये जाते

फिर बीमार होकर और भूखे रह–रह कर मार दिये जाते। बच जाने वालों पर रसायनिक अनुभव करके उन्हें अपंग कर दिया जाता और फिर उन्हें मौत की गोद में पहुंचा दिया जाता। इस सब के बावजूद भी अगर कुछ लोग बच जाते तो नाज़ी जर्मन उन्हें गैस चैम्बरों में डालकर मार देते। यूरोप के कई अजाएबघरों में ग़ैस चैम्बरों का शेष अब भी दर्शकों के लिये रखी गयी हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मन नाज़ियों ने "हॉलोकास्ट" के लिये जो इस्तेलाह इस्तेमाल की उससे मुराद "यहूदियों के मसलों का आख़िरी हल" था ये इस्तेलाह जर्मन भाषा से संबंधित थी।

सहयूनी इतिहासकारों के अनुसार जर्मनी की हर संस्था इतने बड़े क़त्ल के प्रोग्राम में लिप्त थी। जर्मन ग्रह मंत्रालय और मसीही चर्चों ने यहूदियों का पैदाइशी रिकार्ड दिया और ये बात निश्चित की कि कौन–कौन सी बस्ती में कौन–कौन यहूदी हैं। जर्मन डाक विभाग ने वो ख़त संबंधित शासकों तक पहुंचाये। जर्मन वित्त मत्रांलय ने यहूदियों की सम्पत्तियों का ब्योरा उप्लब्ध कराया। जर्मन की व्यापारिक संस्थाओं ने यहूदी व्यापारियों, यहूदी नौकरों और यहूदी मज़दूरों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी। जर्मन संचार मंत्रालय ने यहूदियों को उनके मृतक कैम्पों में ले जाने के लिये साधन और रेलगाड़ियां उपलब्ध करायीं यहां तक कि जर्मन विश्वविद्यालयों तक ने यहूदी छात्रों को प्रवेश देने से इनकार कर दिया और यहूदी शिक्षा व इस्राईली लिट्रेचर को आग के हवाले कर दिया।

यहूदियों का क़त्ल–ए–आम उस इलाक़े में हुआ जो नाज़ी जर्मनियों के क़ब्ज़े में था। जहां अब लगभग 35 यूरोपीय देशों की सल्तनतें स्थापित हैं। इससे पहले यहां यहूदियों की बस्तियां आबाद थीं और 1939 ई0 सात मिलियन यहूदी नुफूस यहां हंसते–खेलते घरों में आबाद थे, जिनमें पांच मिलियन को यहां क़त्ल कर दिया गया था। पोलैन्ड और रूस में क़त्ल होने वाले यहूदियों की संख्यां इसके अतिरिक्त है। दूसरे लोग अगर अपना धर्म या राय बदल लेते तो उन्हें क़त्ल से बचा लिया जाता था लेकिन यहूदियों के लिये ये छूट भी नहीं थी। यहूदियों की हत्याओं में औरतें, बच्चों और बूढ़ों में कोई भेदभाव नहीं था। कबीले के क़बीलों की हत्या कर दी जाती और उनके बच्चों पर रसायनिक प्रयोग करके उन्हें भी मौत की घाटी में ढकेल दिया जाता।

इस दौरान फ्री मेस्ज़ेज़ को भी गिरफ़्तार करके मौत के कैम्पों में भेजा गया। हिटलर का पुख़्ता नज़रिया ये था कि फ्री मेस्ज़ेज़ भी यहूदियों में से हैं। इसीलिये इन कैम्पों में उन्हें ज़बरदस्ती लाल कपड़े पहनाये जाते और एक लाख से दो लाख की संख्यां में उन्हें उन मृतक कैम्पों में नाज़ियों ने क़त्ल किया। नाज़ी जर्मनी जिन–जिन इलाक़ों को जीतते वहां–वहां से यहूदियों को ख़त्म करते जाते, यहां तक जब पोलैन्ड का जीता तो इतनी बड़ी संख्यां में यहूदियों का क़त्ल करना आसान न था। अतः लम्बे विचार–विमर्श के बाद कम समय और कम लागत में क़त्ल करने के लिये जहरीली गैस का प्रयोग किया गया। पोलैन्ड की धरती यहूदियों की हत्या की बहुत बड़ी साक्षी है। छः मृतक कैम्पों से शुरू होने वाला हॉलोकास्ट के पोलैन्ड समेत जीते गये देशों में पन्द्रह हज़ार से ज़्यादा कैम्प बन गये। इन कैम्पों में यहूदियों से जी तोड़ मेहनत ली जाती और फिर आवश्यकता न रहने पर उन्हें क़त्ल कर दिया जाता। जबकि अत्यधिक यहूद मेहनत के दौरान ही दम तोड़ देते। शुरू में ये कैम्प शहरों के बाहर थे, लेकिन ट्रांसपोर्ट के अत्यधिक ख़र्च के कारण बाद में इन कैम्पों को यहूदियों की बस्तियों के निकट ही स्थानान्तरित कर दिया गया।

इससे बुरे हालात रूस के विजय किये गये क्षेत्रों में पेश आये। यहां यहूदियों को ज़िन्दा भी जला दिया गया और जब गोली मारने और ज़िन्दा जलाने का साधन उपलब्ध न रहा या उसे उपलब्ध कराना मंहगा लगने लगा तो लाखों यहूदियों को रूस के अत्यधिक ठन्डे क्षेत्रों में बिना अन्न व जल के अकेले छोड़ दिया गया और ये लोग जान लेवा ठन्डी हवाओं से जिन्दगी की बाज़ी हार गये। इन सब के बावजूद सन् 1941 ई0 के आख़िर तक रूस के केवल 15 प्रतिशत यहूदी मारे गये थे। इस गति को तेज़ करने के लिये एक बार फिर बड़े पैमाने पर ज़हरीली गैसों का प्रयोग किया गया और ज़ाहिर है कि ये अनुभव शहरी क्षेत्रों में संभव न था, अतः इसके लिये शहर से बाहर बहुत बड़ी–बड़ी जगहें बनायी गयीं, जहां यहूदी नस्ल को नेस्तो नाबूद करने का काम सालों तक दोहराया जाता रहा।

यहूदियों ने इन सारे ज़ुल्म व सितम के ख़िलाफ़ आवाज़ भी उठायी, लेकिन बेसूद, कुछ कैम्पों में नौजवान

यहूदियों ने हथियार तक भी उठाये, लेकिन ज़ाहिर है नाज़ी जर्मन उस समय पूरी दुनिया से कन्ट्रोल न होने वाला तूफ़ान था तो यहूदी इससे कैसे जान छुड़ा सकते थे।

फिर एक पहलू ये भी है दुनिया के किसी कोने से उस समय और आज भी यहूदियों के पक्ष में आवाज़ न उठी। इस क़ौम ने जिस बर्तन में खाया उसी में छेद किया। हर क़ौम को डसने की कोशिश की। हर गिरोह को ब्लैकमेल किया। दौलत की ख़ातिर इन्सानियत को दांव पर लगाया। दूसरे विश्वयुद्ध के इस दर्दनाक पहलू का दूसरा अंधकारमय रूख़ ये है कि विश्वयुद्ध के दोनों पक्षों को पूंजी उपलब्ध कराने वाली बहुत बड़ी फ़र्म यहूदियों की ही मिल्कियत थी। क्या अपने धर्म के लोग बल्कि अपने नस्ली रिश्तेदारों पर इतना बेपनाह ज़ुल्म होते देखकर वो पूंजी की उपलब्धि बंद नहीं कर सकते थे?

क़रीब था कि यहूदियों की नस्ल ही इस धरती से मिट जाती। लेकिन अल्लाह तआला ने नबियों के क़त्ल, नाशुक्री, ज़िल्लत व मसकनत और इबरत के इस निशान को क़यामत तक बाक़ी रखना है। शायद इस हिकमत के तहत अल्लाह की मशीयत ने उन्हें फ़िलिस्तीन में वक़्ती जगह दी ताकि उनकी नस्ल क़यामत तक बाक़ी रहे। अगर उनमें थोड़ी सी अक़्ल होती तो इस जगह को ग़नीमत समझकर अमन व सुकून से रह लेते। फ़िलिस्तीनी उन्हें खा तो नहीं लेते। लेकिन अफ़सोस है उनकी समझ पर कि अपने मेज़बानों पर आज भी उन्होंने ज़िन्दगी तंग कर रखी है। हम चढ़ते हुए सूरज के पीछे उस दिन को उन आंखों से देख रहे हैं फ़िलिस्तीन की धरती अपने अस्ल वारिसों के हाथ में होगी और यहूदी अपने बुरे कामों के कारण एक बार फिर दुनिया में ज़िल्लत व मसकनत का निशान–ए–इबरत होंगे। इन्शाअल्लाह तआला।

हज की फ़ज़ीलत

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: "من حج لله، فل فلم یرفث ولم یفسق رجع کیوم ولدته امه".

(بخاری کتاب الحج: ۱۵۲۱– مسلم کتاب الحج: ۳۲۹۱)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है फ़रमातें हैं: नबी करीम (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः "जिसने अल्लाह के लिये हज किया और जिमाअ (सम्भोग, हमबिस्तरी) या उसकी बात और गुनाह नहीं किया, तो वो इस तरह गुनाहों से पाक होकर लौटेगा जैसे उस दिन था जिस दिन उसकी मां ने उसको जना था।"

शेष: ईमान व अक़ीदा हमारा सबसे क़ीमती सरमाया

लिहाज़ा हमको अपने हर फ़ैसले में इसको पेश नज़र रखना चाहिये कि इसके असरात हमारी आख़िरत वाली ज़िन्दगी पर क्या पडेंगे, हमारे बुज़ुर्गों ने जो ख़िदमत अन्जाम दी है, और जिनकी ख़िदमत के नतीजे में आज हम मुसलमान हैं। वो ख़िदमत उन्होंने त्याग व कुर्बानी से अन्जाम दिया है। ये हमारे मदरसों व मकतबों की एक ज़िम्मेदारी हुई, बाक़ी उन मौजूदा हालात और दूसरे मसलों का मुक़ाबला करने के लिये हमारे उलमा व क़ायदीन ख़ासकर के दीनी तालीमी कौंसिल के सदर व ज़िम्मेदार हमारी जो रहनुमाई फ़रमायें और जिस तरह की कुर्बानी की मांग करें उसके लिये हमें हर तरह से तैयार रहना चाहिये। जब हमारे रसूल स0अ0 और आपके सहाबा ने खजूर चूस–चूस कर और ख़न्दक़ की जंग में शदीद ठन्डक व तूफ़ान में पेट पर पत्थर बांधकर दीन व अक़ीदे की हिफ़ाज़त की है तो क्या हम अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा बचाकर अपने बच्चों के दीन व अक़ीदे की हिफ़ाज़त के लिये अपने गांव और क़स्बे में मकतब नहीं क़ायम कर सकते। अगर हम ऐसा न कर सकें तो कल क़यामत में उन्हीं बच्चों का (जिनके लिये हम हज़ार जतन करते हैं) हाथ होगा, और हमारा दामन अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करेंगे और कुरआन के अल्फ़ाज़ कहेंगे:

"ऐ हमारे परवरदिगार हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों का कहा माना तो उन्होंने हमको रास्ते से गुमराह कर दिया, ऐ हमारे परवरदिगार उनको दुगना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर।"(सूरह एहज़ाब : 67–68)

वो कैसी हैरत का वक़्त होगा, कैसा नफ़्सी–नफ़्सी का आलम होगा, उस दिन की पकड़ से अपने को बचाने के लिये आज हमें जो कुर्बानी भी देनी पड़े उसको बसद शौक़ क़ुबूल करना चाहिये, और अपने सरबराहों के बताये और बनाये हुए ख़ुतूत पर ग़ामज़न होने के लिये कमर कस लेना चाहिये कि किसी क़ौम की ज़िन्दगी की यही पहचान है। हालात अगरचे नाज़ुक और सख़्त हैं लेकिन अज़्म व हौसला पत्थर से पानी निकालता है और तूफ़ान का रुख़ मोड़ देता है। और हमारी तारीख़ में तो बार–बार ऐसा हुआ है, क्या हम अपने पिछले इतिहास की टूटी हुई कड़ी को बुनना पसंद करेंगे?

इतिहास बोलता है

अब्दुल हफ़ीज़ इस्लामी

भारत के विख्यात राज्य गुजरात के वर्तमान मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जो कि मुस्लिम दुश्मनी का खुला हुआ रिकार्ड रखते हैं, जिन्हें पिछले दिनों ही बीजेपी ने आने वाले 2014ई के लोकसभा चुनाव के लिये अपनी चुनावी कमेटी के अध्यक्ष की हैसियत से जो उन्नति दी है ये चीज़ धर्मनिरपेक्षता व अमन व शांति की दुश्मन पार्टी "भारतीय जनता पार्टी" की सोची समझी रणनीति है।

बीजेपी की वर्तमान पॉलिसियों के पीछे जो चीज़ कार्यरत है उसे अच्छी तरह से समझना हो तो थोड़ा इतिहास के पन्नों को पलटना होगा तब जाकर ये बात साफ़ हो सकेगी कि नरेन्द्र मोदी जैसे कट्टरवादी व्यकितत्व को क्यों उन्नति दी गयी? जो कि हज़ारों मासूम मुसलमानों के क़त्ल और कई औरतों के बलात्कार और औरतों व नौजवान लड़कियों के निर्वस्त्र कर जलाने के अलावा करोड़ों रूप्यों की मुस्लिम सम्पत्तियों को जलाकर राख कर देने और अपने ही राज्य के मुस्लिम नागरिकों को शरणार्थी के रूप में जीवन व्यतीत करने पर मजबूर कर देने का ज़िम्मेदार है। स्वतन्त्र भारत से पहले जब देश आज़ाद होने के निकट था और अंग्रेज़ ये बात अच्छी तरह जान चुके थे कि अब ज़्यादा दिनों तक स्वतन्त्रता आंदोलन को रोका नहीं जा सकता, लिहाज़ा उन लोगों ने एक गहरी साज़िश के तहत एक ऐसा प्लान तैयार किया कि भारत को आज़ाद तो कर दिया जाये लेकिन इस्लाम धर्म और उसके मानने वाले (स्वतन्त्र भारत में) उभरने न पायें। अतः अंग्रज़ों ने एक तुच्छ रणनीति के तहत अपने प्रतिनिधी (वायसराय) को अपनी योजना की जानकारी दी कि देखो भारत की स्वतन्त्रता की घड़ियां निकट से निकटतम होती जा रही हैं और हम भी स्वतन्त्रता आंदोलन को क़तई रोक नहीं सकते और अगर इन हालात में देश स्वतन्त्र कर दिया गया तो मुसलमान क़ाबिज़ हो जायेंगे। ग़रज़ ये कि हिन्द के वायसराय ने अपने अंग्रेज़ आक़ाओं के बनाये गये प्लान के ऐन मुताबिक़ अमल में लाने के लिये स्वतन्त्रता आंदोलन के शुरका में इसे एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव किया जो उनकी बनायी गयी तुच्छ साज़िश को अमली जामा पहना सके।

इस सिलसिले में हिन्द के वायसराय की नज़र पंडित श्रधानन्द पर जा टिकी। ये वही पंडित श्रद्धानन्द हैं जो कांग्रेस पार्टी के सुविख्यात व्यक्ति थे। जो स्वतन्त्रता आंदोलन के दिनो में सारे हिन्दु–मुस्लिम नेताओं के साथ जेल में बन्द थे। कहने का अर्थ ये कि हिन्द के वायसराय ने पंडित श्रद्धानन्द को अपने घर (वायसराय हाउस) बुलाया और उनके सामने अपने दिल की बात रखी। वो ये कि देखो पंडित जी हम (अंग्रेज़) इस देश को स्वतन्त्र करने को तैयार हैं लेकिन ये बात हमको समझ नहीं आती कि इस देश को आज़ाद कर दिये जाने से तुम लोगों (हिन्दुओं) को क्या फ़ायदा मिलेगा। क्योंकि तुम लोगों को शासन का कोई अनुभव नहीं रखते जबकि तुम लोग बहुसंख्यक हो। अगर इन हालात में देश को आज़ाद कर दिया जाये तो न चाहते हुए भी मुसलमान इस देश पर शासक की हैसियत से हावी हो जायेंगे। दूसरे शब्दों में तुम हमारी ग़ुलामी से निकलकर मुसलमानों के अधीन हो जाओगे।

पाठकों! अब यहां थोड़ा रुककर इस बात का अनुभव करेगें कि अंग्रेज़ी शासन को हिन्दुओं से इस तरह की हमदर्दी क्यों है और मुसलमानों के ख़िलाफ़ हिन्दुओं को क्यों उकसाया जा रहा है? इसमें दो तरह की बातें छिपी हुई है। एक तो मुसलमान और इस्लाम के ख़िलाफ़ अपने दिल की भड़ास निकाल लेना और दूसरी चीज़ ये कि इस देश में उनके शासन की जिन्दगी आख़िरी हिचकियां ले रही थी। अंग्रेज़ों ने अपने शासन को ज़िन्दगी देने और कुछ और सांसे उपलब्ध कराने के लिये हिन्दु–मुस्लिम लड़ाई खड़ी करते हुए 'बांटों और राज करो' वाली पॉलिसी

अपनायी। ये वो छिपी हुई हक़ीक़त थी जिसके तहत पंडित श्रद्धानन्द के दिमाग़ को ग़लतबयानी से वर्ग़लाया गया।

इन हालात में वायसराय की उपरोक्त बातों पर एक हिन्दु नेता की हैसियत से पंडित श्रधानन्द का दिमाग़ ख़राब होना अनिवार्य था। पंडित श्रद्धानन्द ने वायसराय की इब्लीसी बातों को ग़ौर से सुनने के बाद उनसे कुछ मार्गदर्शन मांगा। अतः वायसराय ने श्रद्धानन्द राय को कुछ मशवरे दिये:

1– कोशिश की जाये की मुसलमानों की आबादी इस देश में कम से कम होती चली जाये।

2– हिन्दु बहुसंख्यक को अस्करी ताक़त बनाकर उठाया जाये।

इन दोनों चीज़ों के बग़ैर हिन्दु वर्ग के लिये स्वतन्त्रता बिना किसी अर्थ की होकर रह जायेगी इत्यादि।

उपरोक्म मशवरों के मिलने के बाद पंडित श्रद्धानन्द को वापस जेल भेज दिया गया और कुछ दिनों के बाद उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। क्योंकि वायसराय को इस बात का यक़ीन हो चुका था कि पंडित वाक़ई हमारे काम का आदमी है।

पंडित ने अपनी रिहाई के बाद अंग्रेज़ों की योजना के क्रियान्वयन के लिये "शुद्धि और संगठन" की आधारशिला रखी। अस्ल में ये दो तरह का आंदोलन था यानि एक तीर से दो शिकार करने के इरादे के तहत ये काम किया गया। इस आंदोलन के नाम से साफ़ हो रहा है यानि इसका पहला भाग शुद्धि है जिसका मतलब है पाक करना, दूसरा भाग है संगठन जिसका अर्थ ये था कि हिन्दु क़ौम को फ़ौजी ताक़त में बदलना। पहला ये कि जो लोग हिन्दु से मुसलमान हुए हैं, उन्हें वापस हिन्दु बनाना, दूसरा मक़सद ये कि अगर ये शुद्धि के द्वारा क़ाबू में न आये तो हिन्दु फ़ौजी ताक़त को काम में लाते हुए या तो मुसलमानों को क़ाबू में ले लेना अगर इस तरह से ये क़ाबू में न आ सकें तो उन्हें रास्ते से हटा देना।

उपरोक्त उद्देश्यों के तहत पंडित श्रद्धानन्द ने इस आन्दोलन के अन्तर्गत आगरा और इससे क़रीबी ज़िलों में काम का आरम्भ कर दिया। इन क्षेत्रों का चुनाव भी बहुत सोच–समझकर किया गया क्योंकि वहां के मुसलमान दीनी लिहाज़ से और सामाजिक रूप से बहुत कमज़ोर थे। जब ये ख़बरें भारत के दूसरे क्षेत्रों में आम हो गयीं तो कुछ खुदा तरस बन्दे इस फ़ितना–ए–इरतदाद के ख़िलाफ़ काम करने को अपनी अहम ज़िम्मेदारी जानते हुए उठ खड़े हुए। इस सिलसिले में कुछ नुमायां नामो में कुंवर अब्दुल वहाब ख़ां अलीगढ़, सर रहीम बख़्श पंजाब, गुलाम भैक यज़नग पंजाब, मौलाना अब्दुल क़ादिर बवायूनी, मौलाना अब्दुल हयि कोड़ा जहांबादी के नाम आते हैं।

इन लोगों ने एक संस्था "जमीअत मरकज़िया तब्लीग़ इस्लाम" के नाम से बनायी जिसका मुख्य आफ़िस अम्बाला और प्रान्तीय आफ़िस आगरा में था। 1947ई0 तक उस जमीअत ने हज़ारों मुसलमानों को इस फ़ित्ने से बचाया। सैकड़ों लोगों को इस्लाम में दाख़िल करके उनकी शिक्षा व प्रशिक्षण का बार उठाया। गांव–गांव मकतब बनाये। मुसलमानों के लिये मस्जिदें बनवायीं।

लेकिन इस दौरान देश में बैचैनी की कैफ़ियत पायी जाने लगी और सारे देश में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गये। सन् 1927 ई0 तक ये दंगे देश के एक बड़े हिस्से को अपनी लपेट में ले चुके थे।

इस सिललिसे में प्रोफ़ेसर उमर हयात ख़ां ग़ौरी सदर शिया उर्दू अन्जुमन कॉलिज, भटकल यूं लिखते हैं कि: "इन दोनों आंदोलनों के आरम्भ होने के बाद भारतीय मुसलमानों में इज़्तराब व बैचेनी की लहर दौड़ गयी और दिल्ली के एक मुसलमान ने पंडित श्रद्धानन्द को क़त्ल कर दिया।"

इस प्रकार इस अप्रिय घटना के होने के बाद आन्दोलन का पहला भाग "शुद्धि" करना बंद हो गया लेकिन इसका दूसरा भाग यानि "संगठन" एक नया चोला ओढ़कर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शक्ल में हमारे सामने आया। यानि इस्लाम दुश्मन अंग्रेज़ों के इरादे पर पंडित श्रद्धानन्द के लगाये गये पौधे ने आर एस एस की शक्म में स्वयं को संगठित किया जो आज एक कांटेदार पेड़ की शक्ल लिये हुए कड़वे फल दे रहा है। शुद्धिकरण आन्दोलन की असफलता के बाद साम्प्रदायिक सोच रखने वालों ने ये सोचा कि अब हम मुसलमानों को मुरतद तो नहीं कर सकते, अतः राजनीति से काम करते हुए उन लोगों ने लोगों के दिमाग़ों को बदलने की कोशिश की। अतः उन लोगों ने मुसलमानों के सोच विचार को बदलने के लिये भिन्न–भिन्न प्रयास किये। कभी साहित्य, वहदते अदयान को पेश किया गया तो कभी क़ौमी धारा की बात

कही गई। इसीलिये हर ज़माने में अल्लाह तआला "मुहीउद्दीन" को पैदा फ़रमा देते हैं। इसीलिये मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी रह0 और हज़रत अल्लामा इक़बार रह0 इस समय एकेश्वरवाद के फ़लसफ़े, धार्मिक और क़ौमी धारा के नारों की हक़ीक़त को पहुंच चुके थे, इसीलिये मौलाना मौदूदी रह0 ने इस वैचारिक इरतिदाद (दीन से फिर जाना) ख़्यालों और फ़लसफ़ों को नाकाम बना दिया और इसी क्रम में कई किताबें लिख दीं। इसी तरह दूसरी तरफ़ अल्लामा इक़बाल रह0 ने अपनी साहित्यिक भाषा में लोगों के दिमाग़ों को साफ़ किया।

इस वैचारिक इरतिदाद की असफलता के बाद मुस्लिम दुश्मन नेताओं ने संगठन का पुनर्जन्म किया यानि हिन्दुओं को फ़ौजी ताक़त में बदलने के लिये अपना पूरा ध्यान इसी ओर केन्द्रित कर दिया। और देश के कोने–कोने में आरएसएस की शाखाएं बन गयीं जहां पर हिन्दुओं को मुसलमानों के ख़िलाफ़ दिमाग़ी प्रशिक्षण के साथ–साथ शारीरिक प्रशिक्षण भी देना शुरू कर दिया गया। जैसे–जैसे दिन बीतते गये सादा ज़हन हिन्दुओं के अन्दर ज़हर घोला गया और आज भी ये सिलसिला जारी है। साम्प्रदायिक दंगे करवाये गये, अकारण मुसलमानों का ख़ून बहता रहा, सम्पत्तियां नष्ट की गयीं और विशेषकर अर्थव्यवस्था को ख़त्म करने के लिये ओछी साज़िशें की जाती रहीं। यथार्थ ये कि इन लोगों की सारी कोशिशों का केवल यही मक़सद है कि मुसलमान इस देश में उभर न सकें और हिन्दुस्तान को अखण्ड भारत (हिन्दु राष्ट्र) में बदला जायें और ये देश एक धर्मनिरपेक्ष देश से एक शुद्ध हिन्दु स्टेट में बदला जाये। इस दौरान बहुत सी बातें कहीं जाती रहीं। मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप का प्रयास, यूनिफ़ार्म सिविल कोड की गूंज, हिन्दु वोट प्राप्त करने और उन्हें ख़ुश करने के लिये बाबरी मस्जिद को श्रीराम जन्मभूमि घोषित करना, मुसलमानों को भयभीत करने और हिन्दु युवाओं में जोश पैदा करने के लिये रथ यात्रा के प्रोग्राम को अमल में लाना, जगह–जगह एल0के0 आडवाणी के ज़हरीले भाषण, त्रिशूल का बंटवारा, मौक़े बे मौक़े देश के विभिन्न जगहों पर विश्व हिन्दु परिषद, आर एस एस, बी जे पी के सख़्त क़िस्म के बयान जो मुसलमानों को कष्ट पहुंचाते हैं, इसके अलावां हिन्दुओं को ख़ुश करने और उनके वोट प्राप्त करने के लिये राम जन्म भूमि का शोशा छोड़कर उनका शोषण किया जाना और दिन के उजाले में क़ानून के रखवालों के सामने बाबरी मस्जिद जो अपने अन्दर एक इतिहास रखती है उसे शहीद कर देना, ये सारी बातें इस बात की तरफ़ इशारा कर चुकी हैं कि मुस्लिम दुश्मन लोग इस देश में किस तरह के इरादे रखते हैं। उनका नस्बुल अैन मुस्लिम दुश्मनी पर आधारित है और उनका नारा भी यही है कि "हिन्दु हिन्दी हिन्दुस्तान"।

जब बीजेपी के लोगों को शासन का मौक़ा मिला तो चाहे वो जनता पार्टी के दौर में हो, एन डी ए के दौर में हो, उन दौरों में उन्होंने अपने इक़्तेदार उठाते हुए हिन्दुत्व के लिये रास्ते हमवार करने की कोशिश की और अब भी की जा रही हैं। हिन्दुओं को भड़काने के लिये गोकशी के मसले को बढ़ा–चढ़ा कर पेश करना, शिक्षण संस्थाओं को हिन्दु रंग में तब्दील करना और उनमें जो इतिहास पढ़ाया जाता है उसको बदल डालना और उसमें झूठ व ग़लतबयानी और दरोग़गोई की हद को पार करना। उर्दू के साथ भेदभाव करना और उसे सारे देश से मिटाने की कामयाब कोशिश और इतना ही नहीं बल्कि इस गिरोह की ये भी पॉलिसी रही है कि वो भारतीय सभ्यता व संस्कृति के नाम पर हिन्दु सभ्यता को पूरी शिद्दत के साथ लोगों के सामने लाना और इस सिलसिले में सरकारी प्रसार संस्था का ख़ूब प्रयोग करते हुए रेडियो–टेलीविज़न को नाजायज़ तौर पर काम में लाना। इन लोगों ने आगे बढ़ कर ये भी किया कि सरकारी जात विभाग और जात संस्था मुसलमानों के लिये नौकरी के दरवाज़े बन्द कर दिये, आज ये हालत है कि उनका अनुपात घटते–घटते केवल दो प्रतिशत या उससे भी कम होकर रह गया है, जिसमें क्लर्क से लेकर चपरासी सब शामिल हैं। धर्म परिवर्तन जो कि हर नागरिक का अधिकार है, जिसे भारतीय संविधान ने स्वतन्त्रता दे रखी है, उसमें भी संघ परिवार की ओर से अक्सर हस्तक्षेप किया जाता है। उपरोक्त सभी बातें इस बात की निशानदेही कर रही हैं कि बीजेपी और इस क़बीले से संबंध रखने वाली दूसरी पार्टियां इस देश को किधर ले जाना चाहती हैं।

पंडित श्रद्धानन्द से लेकर नरेन्द्रमोदी तक जितने भी नेता उठे हैं उनका एकमात्र ऐजेंडा यही है वो ये किइस देश में मुसलमान उभरने न पायें और शासन की बाग़डोर संघ परिवार के हाथ में आ जाये जिसके द्वारा इस देश को एक हिन्दु राष्ट्र में बदलने की राहें आसान हो जायें।

(शेष पेज 15 पर)

ईदुल अज़हा के फ़ज़ाएल
क़ुर्बानी के एहकाम और मसाएल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

दुनिया की हर क़ौम और हर मज़हब का साल में कोई न कोई त्योहार ज़रूर होता है। इन्सानी फ़ितरत इसकी मांग भी करती है कि साल में ख़ुशियों के इज़हार का भी कोई दिन होना चाहिये। इसीलिये दीन–ए–फ़ितरत इस्लाम में भी इन्सानी फ़ितरत की रिआयत रखी गयी है और साल में दो दिन ख़ुशियां मनाने के भी मुक़र्रर किये गये हैं। अबूदाऊद में हज़रत अनस बिन मालिक रह0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 मदीना तशरीफ़ लाये तो मदीना वालों को देखा कि उन्होंने साल में खुशियां मनाने के दो दिन मुक़र्रर कर रखे हैं: आप स0अ0 ने पूछा: "ये कैसे दो दिन हैं?" सहाबा किराम रज़ि0 ने अर्ज़ किया: जाहिलियत के ज़माने में हम उन दोनों में खेल–कूद किया करते थे, आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: "अल्लाह ने उन दिनों के बदले में उनसे बेहतर दो दिन तुमको इनायत फ़रमाये हैं, ईदुल अज़हा और ईदुल फ़ित्र।"

इनमें से ईदुलफ़ित्र रमज़ानुल मुबारक के बाद मनायी जाती है, जब अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के बन्दे पूरे एक महीने तक ख़ास वक़्त में खाने–पीने और नफ़्सानी ख़्वाहिश से परहेज़ करते हैं। दूसरी ईद यानि ईदुल अज़हा ज़िल्हिज्जा की दस तारीख़ को मनायी जाती है। यही हज का ज़माना भी होता है। हज और कुर्बानी के लगभग मनासिक और काम हज़रत इब्राहीम, हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलै0 की अलग–अलग कुर्बानियों और कामों की याद में मनाये जाते हैं। लेकिन दोनों ईदों में समान चीज़ ये है कि इसमे दूसरी क़ौमों के त्योहारों की तरह कोई शोर व गुल बिल्कुल नहीं है। दोनों में जो काम बताये गये हैं, उनमें इस्लाम की सादगी की झलक मिलती है। इन ख़ुशी के मौक़ो पर भी बन्दे अल्लाह की बड़ाई का नारा लगाते हुए बस्ती के बाहर ईदगाह या किसी मस्जिद में जाते हैं और अल्लाह के सामने दो रकआत नमाज़ अदा करके अपनी बन्दगी का इज़हार करते हैं। मानों ईद की नमाज़ मुसलमानों की ख़ुशी मनाने का नमूना हैं। मुसलमानों से मांग यही है कि ख़ुशी के मौक़े पर भी अल्लाह के सामने सर झुका दें और उसके हुक्मों के सामने भी सर झुका दें। ईदुल अज़हा के मौक़े पर ईद की नमाज़ के अलावा ज़िल्हिज्जा के शुरू के दस दिन की अहमियत व फ़ज़ीलत भी अलग से बयान की गयी हैं। इसीलिये बुख़ारी में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "इन दस दिनों से बेहतर दूसरे कोई भी ऐसे दस दिन नहीं है जिनमें अल्लाह को नेक अमल ज़्यादा महबूब हों। सहाबा ने पूछा: अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी नहीं? आप स0अ0 ने फ़रमाया, अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी नहीं सिवाये उस शख़्स के जो अपनी जान व माल के साथ निकला हो और उसमें से कोई चीज़ भी वापस न लाया हो, और तिरमिज़ी और इब्ने माजा की रिवायत में है कि आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की इबादत ज़िल्हिज्जा के दस दिनों से बेहतर और कोई ज़माना नहीं है, उनमें एक दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर और एक रात में इबादत करना शब क़दर में इबादत करने के बराबर है।"

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने सूरह फ़ज्र में जिन दस रातों की क़सम खाई है मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं, इन दस रातों से ज़िल्हिज्जा के पहले अशरे की रातें ही मुराद हैं। इनमें ख़ास तौर पर ज़िल्हिज्जा की 9/तारीख़ की बड़ी फ़ज़ीलत वारिद हुई है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू क़तादा रज़ि0 की तवील हदीस में है कि: "अरफ़ा का रोज़ा रखने पर मेरा अल्लाह पर गुमान ये है कि उसे पिछले एक साल और आगे के एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देगा।" लेकिन अरफ़ा के रोज़ों की ये फ़ज़ीलत ग़ैर हाजियों के लिये है। हाजियों को इस रोज़े से मना कर दिया गया है ताकि अरफ़ात के मैदान के काम अच्छी तरह अन्जाम दे सकें। इसीलिये अबूदाऊद में अबूहुरैरा रज़ि0 की रिवायत आयी है कि आंहज़रत स0अ0 मक़ामे अरफ़ात में अरफ़ा का रोज़ा रखने से मना कर दिया है।

क़ुर्बानी: ज़िल्हिज्जा के महीने में सबसे अहम इबादत क़ुर्बानी है। इसीलिये हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं: नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: "आदम की औलाद नहर के दिन जो अमल करता है उनमें अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब ख़ून बहाना (क़ुर्बानी करना) है। वो जानवर क़यामत के दिन अपनी सींगों, बाल और खुरों के साथ आयेगा और ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही अल्लाह के यहां मक़बूलियत हासिल कर लेता है, लिहाज़ा उसको ख़ुशदिली से किया करो।" (तिरमिज़ी, इब्ने माजा) साहिबे निसाब पर क़ुर्बानी करना अहनाफ़ के नज़दीक वाजिब है,

इसलिये कि हदीस में नबी करीम स0अ0 का इरशाद नक़ल किया गया है कि: "जिसके पास वुसअत हो और कुर्बानी न करे वो हमारी ईदगाह के पास न आये।"

कुर्बानी का निसाबः कुर्बानी हर अक़्ल वाले बालिग़, मुक़ीम मुसलमान पर वाजिब होती है। शर्त ये है कि वो साढ़े बावन तोला (612 ग्राम) चांदी या उसकी क़ीमत का मालिक हो। और ये कि उसकी ज़रूरी ज़रूरतों से ज़्यादा हो, या व्यापारिक माल की शक्ल में हो या आवश्यकता से अधिक घरेलू सामान या रहने के मकान से ज़्यादा मकान हो। कुर्बानी और ज़कात के निसाब में एक फ़र्क़ ये भी है कि ज़कात में साल गुज़रने की शर्त होती है, लेकिन कुर्बानी में साल गुज़रने की शर्त नहीं है। इस ज़माने में निसाब का मालिक है तो कुर्बानी वाजिब होगी।

कुर्बानी के दिनः कुर्बानी के तीन दिन हैं। 10, 11 और 12 ज़िलहिज्जा। इनमें से अफ़ज़ल पहले दिन कुर्बानी करना है। अलबत्ता जहां ईद की नमाज़ जायज़ होती है वहां ईद की नमाज़ से पहले कुर्बानी करना जायज़ नहीं है। इसलिये बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत जन्दब की रिवायत है फ़रमाते हैं: नबी करीम स0अ0 ने नहर के दिन नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा दिया, फिर कुर्बानी की और इरशाद फ़रमाया: जिसने नमाज़ पढ़ने से पहले कुर्बानी की थी वो इसकी जगह दूसरी कुर्बानी करे और जिसने कुर्बानी नहीं की थी वो अल्लाह का नाम लेकर कुर्बानी करे।

कुर्बानी के जानवरः कुर्बानी सिर्फ़ ऊंट, गाय, भैंस, बकरी, दुम्बा, भेड़ (नर–मादा दोनों) की जायज़ है। बक़िया जानवरों की जायज़ नहीं है। इसमें भी हदीस शरीफ़ में ये शर्त लगायी गयी कि मुसन्ना हो और ऐबों से ख़ाली हो। इसीलिये मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "सिर्फ़ मुसन्ना की कुर्बानी किया करो यहां तक कि तुम पर तंगी हो तो भेड़, दुम्बा का छः माह का या उससे ज़्यादा का जानवर ज़िबह कर लिया करो।"

इन जानवरों में से हर एक का मुसन्ना अलग–अलग होता है। इसीलिये ऊंट का मुसन्ना वो है जो पांच साल पूरे कर चुका हो। गाय और भैंस का मुसन्ना वो है जो दो साल पूरे कर चुका हो, और बकरी और भेड़ और दुम्बा का मुसन्ना वो है जो एक साल पूरे कर चुका हो। लेकिन जैसा कि हदीस में गुज़रा है, दुम्बा अगर छः माह या उससे ज़्यादा का हो तो उसकी कुर्बानी की जा सकती है।

भेड़, बकरी की कुर्बानी सिर्फ़ एक व्यक्ति की तरफ़ से हो सकती है जबकि ऊंट व गाय इत्यादि में सात लोग शामिल हो सकते हैं, लेकिन शर्त ये है कि किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो और सबकी नियत कुरबत की हो।

ऐबों की तफ़सीलः आंहज़रत स0अ0 ऐबों से पाक और उम्दा जानवरों की कुर्बानी फ़रमाया करते थे और उम्मत को भी ऐबों से पाक, उम्दा जानवरों की कुर्बानी की ताकीद फ़रमाया करते थे। हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने हमको हुक्म दिया कि जानवर की आंख कान का जायज़ा लें और कान कटे–फटे और कान मे सूराख़ वाले जानवरों की कुर्बानी न किया करें। (अबूदाऊद, नसाई, इब्ने माजा)

अबूदाऊद, नसई और इब्ने माजा ही में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 से सवाल किया गया: किन जानवरों की कुर्बानी से बचा जाये?आप स0अ0 ने हाथ के इशारे से फ़रमाया: चार से! वो लंगड़ा जानवर जिसका लंगड़ापन ज़ाहिर हो, वो काना जिसका कानापन ज़ाहिर हो, ऐसा बीमार जानवर जिसकी बीमारी ज़ाहिर हो, और वो लाग़र ज़िसकी हड्डियों में गूदा ही न हो।

इन जैसी हदीसों से फ़ुक़्हा ने ऐबों के बारे में निम्नलिखित तफ़्सीलें बयान की हैं:

1– अंधे, काने और लंगड़े जानवर की कुर्बानी जायज़ नहीं है। उसी तरह उस बीमार और लाग़र जानवर की कुर्बानी भी ठीक नहीं जो अपने पैरों पर कुर्बानी की जगह तक न जा पाये।

2– जिस जानवर की दुम तिहाई से ज़्यादा कटी हो उसकी कुर्बानी भी नाजायज़ है।

3– जिस जानवर के दांत बिल्कुल न हों या अक्सर न हों उसकी कुर्बानी भी नाजायज़ है। यही हुक्म उस जानवर का भी है जिसके कान पैदाइशी तौर पर न हों।

4– जिस जानवर की सींग पैदाइशी तौर पर न हों, या बीच से टूट गये हों, उसकी कुर्बानी जायज़ है, लेकिन अगर सींग जड़ से उख़ड गयी हो तो असर दिमाग़ तक पहुंच जाता हैं।

5– ख़स्सी (बधिया) की कुर्बानी न केवल जायज़ बल्कि अफ़ज़ल और सुन्नत है। आंहज़रत स0अ0 से ख़स्सी की कुर्बानी करना साबित है।

कुर्बानी का तरीक़ाः अपनी कुर्बानी अपने हाथ से

करना अफ़ज़ल है। लेकिन अगर क़ुर्बानी करना नहीं जानता या किसी और वजह से खुद भी नहीं करना चाहता तो कम से कम ज़िबह के वक़्त हाज़िर रहने की फ़ज़ीलत ज़रूर हासिल करे, बहुत से लोग इस वजह से मौजूद भी नहीं रहना चाहते, ये रूझान सही नहीं है।

क़ुर्बानी के वक़्त जो दुआंए मनकूल हैं, उनका पढ़ना अफ़ज़ल है, ज़रूरी नहीं है। सिर्फ़ ज़िबह के वक़्त बिस्मिलिल्लाह अल्लाहुअकबर कहना ज़रूरी है। क़ुर्बानी करते वक़्त नीचे दिये गये कामों का ख़्याल रखना चाहिये:

1– ज़िबह करने से पहले जानवरों को चारा खिला दिया जाये। भूखा–प्यासा रखना मकरूह है।

2– ज़िबह की जगह सहूलत से ले जाये, घसीट कर ले जाना मकरूह है।

3– क़िब्ला रुख़ बायें करवट लिटांए, उससे जान आसानी से निकलती है।

4– छुरी तेज़ रखे, कुन्द छुरी से ज़िबह करना मकरूह है।

5– छुरी जानवर को लिटाने से पहले तेज़ कर ले और उससे छिपाकर तेज़ करे।

6– एक जानवर के सामने दूसरे जानवर को ज़िबह न करे।

7– ज़िबह के बाद जानवर के ठन्डे होने से पहले न सर अलग करे न खाल निकाले।

8– सुन्नत ये है कि जब जानवर ज़िबह करने के लिये क़िब्ला की तरफ़ लिटांए तो ये दुआ पढ़े:

"إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَ الْأَرْضَ حَنِيفًا وَّ مَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، إِنَّ صَلَاتِي وَ نُسُكِي وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ بِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَ أَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَ لَكَ"

और ज़िबह करने के बाद ये दुआ पढ़े:

"اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَ خَلِيْلِكَ إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ"

क़ुर्बानी का गोश्त: अफ़ज़ल ये है कि क़ुर्बानी के गोश्त के तीन हिस्से कर लें। एक हिस्सा अज़ीज़ व अक़ारिब के लिये, एक फ़क़ीरों के लिये और एक अपने लिये। लेकिन ये सिर्फ़ अफ़ज़ल है। वो पूरा गोश्त भी इस्तेमाल कर सकता है और पूरा हदिया और सदक़े में भी दे सकता है। क़ुर्बानी को गोश्त ग़ैर मुस्लिमों को भी दिया जा सकता है। खाल अपने इस्तेमाल में ले ये ग़रीबों को दे दे, लेकिन क़ुर्बानी का गोश्त या खाल बेची तो उसका ग़रीबों पर सदक़ा करना ज़रूरी हो जाता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

शेष : नरेन्द्र मोदी की उन्नति की .....

इसके लिये बीजेपी आगे–आगे है और आर एस एस इसके लिये बैकबोन का काम कर रही है और ये भी एक हक़ीक़त है कि आर एस एस की मर्ज़ी के बग़ैर बीजेपी का बड़े से बड़ा लीडर भी ज़रा सी हरकत नहीं कर सकता, क्योंकि बीजेपी में जितने भी लीडर हैं, उनमें से अधिकतर आर एस एस के प्रशिक्षण प्राप्त हैं। आर एस एस को ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो उनकी पॉलिसी और एजेंडे को पूरी ताक़त के साथ अमल में ला सके। अतः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अध्यक्ष मोहन भागवत की नज़र गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी पर पड़ी। इससे पहले आर एस एस ने अटल बिहारी वाजपेई, एल0 के0 आडवाणी और पी0 वी0 नरसिम्हाराव और उन जैसी सोच रखने वालों से ख़ूब काम लिया। अब वर्तमान समय में बीजेपी के सीनियर लीडर एल के आडवाणी को डूबता हुआ सूरज समझकर बाज़ू कर दिया गया, क्योंकि मुस्लिम दुश्मन जमाअत आर एस एस को बुज़ुर्गों और पुराने चेहरों की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही, बल्कि नवयुवकों की आवश्यकता है जो मुसलमानों को गाजर मूली की तरह काटने का हुनर जानते हों और इसका अमली अनुभव भी रखते हों। ये सारी विशेषतांए नरेन्द्र मोदी में हैं जिसका प्रदर्शन 2002ई0 गुजरात में वो कर चुके हैं और अब इसको दोहराने के लिये उनके बाज़ुओं को मज़बूत करने के लिये आर एस एस कोशिश में लगी हुई है, अगर बीजेपी अपने आक़ाओ के इरादों को पूरा करने में कामयाब हो जाती है तो ये सारे देश के लिये तबाही का कारण होगा।

2014ई0 के लोक सभा चुनाव, भारत के इतिहास के अहम चुनाव होंगे, इस देश के लिये एक नाज़ुक घड़ी आ पहुंची है कि ये देश धर्मनिरपेक्षता और शांतिप्रियता पर स्थापित रहता है या साम्प्रायदिकता और अशांति के दलदल में फसने वाला है। अब इसका फ़ैसला करना है देश के हर शांतिप्रिय नागरिक को। अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहलाने वाली और उसका दावा करने वाली हर राजनीतिक पार्टी पर आधारित है, शायद इसी को देखते हुए अल्लामा इक़बाल रह0 ने कहा था:

न समझोगे मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्तान वालों
तुम्हारी दासतां तक भी न होगी दासतानो में।

फ़ासिस्ट राजनीति को समझना बहुत ज़रूरी है

दिग्विजय सिंह

फ़ासिस्ट ताक़तें स्वयं को श्रेष्ठ स्थान पर स्थापित करने और अपने दृष्टिकोण को जनता की राष्ट्रीय भावना बताने का कोई अवसर नहीं गंवाती, पूरी दुनिया में यही रिवायत है। अपने देश में कार्यरत फ़ासिस्ट ताक़तें अपने आप को श्रेष्ठ बनाने के लिये विदेशी पब्लिक रिलेशन कम्पनियों तक का सहयोग लेने से परहेज़ नहीं करतीं। अतीत में भी फ़ाशिज़्म की यही रिवायत रही है। जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने जर्मनी को यहूदियों से पाक कराने का नारा दिया था। जब वो पूरी तरह से शासन में आया तो उसने अपने देश में रहने वाले यहूदियों को देश विरोधी घोषित करने की मुहिम चलाई और उनको शोषण करने वालों के तौर पर चिन्हित किया। इस काम में हिटलर का उस समय की मीडिया ने बहुत सहयोग किया। हिटलर के साथी ग्वैल्स ने इसी दौरान इस उसूल को सफलता से लागू कर दिया था कि 'अगर किसी झूठ को सौ बार बोलो तो वो सच हो जाता है' आज भी फ़ासिस्ट शासक और पार्टियां पूरी दुनिया में इसी नियम पर कार्यरत हैं। जर्मनी में यहूदी धर्म के मानने वालों को हिटलर ने इसी तरकीब का इस्तेमाल करके शोषण करने वाला देश का ग़द्दार साबित करने की कोशिश की थी। इसके बाद उनको कष्ट पहुंचाने की मुहिम शुरू हुई। हिटलर और उनकी पार्टी ने इस शोषण को क़ौम परस्ती का नाम दिया था। शोषण की ये मुहिम दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान बहुत ही कुरूप ढंग से पूरी मानवता को शर्मसार कर गयी थी।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इस समय के सरसंचालक एम. एस. गोलवाल्कर ने अपनी किताब "दि आरावर नेशनहुड डिफ़ाइड" में हिटलर की इन्हीं विशेषताओं के कारण से जम कर तारीफ़ की है। आर एस एस के संस्थापक डी हेडग्वार के पारिवारिक डाक्टर बी0 एस0 मन्जय भी फ़ासीवाद से बहुत प्रभावित थे। डाक्टर मन्जय लन्डन भी गये थे, जहां वो गोल मेज़ कान्फ्रेंस में भी शामिल हुए थे। लन्डन के बाद उन्होंने यूरोप के दूसरे देशों का सफ़र किया। वो इटली गये जहां वो इटली के तानाशाह मुसोलिनी के मेहमान रहे। मुसोलिनी ने उन्हें फ़ौजी प्रशिक्षण केन्द्रों को दिखाया। इस यात्रा की तफ़्सील डाक्टर मन्जय की अपनी डायरी में मिलती है, जहां उन्होंने जिसमें उन्होंने तेरह पन्नों में मुसोलिनी की प्रशंसा की है। आर एस एस के सभी लीडर दूसरे विश्वयुद्ध के पहले बहुत ही गर्व से स्वीकार करते थे कि उनके दृष्टिकोण पर जर्मनी के हिटलर और इटली के मुसोलिनी का अत्यधिक प्रभाव है। उन दिनों ये खुलेआम स्वीकार किया जाता था कि आर एस एस पर उन फ़ासीवादी शासकों का प्रभाव है। ये सच है कि मुसोलिनी और हिटलर की राजनीतिक सोच के आधार पर इटली के राजनीतिक साहित्यकार माज़िनी का अत्यधिक प्रभाव है और आर एस एस की संस्थापना के समय प्रयोग की गयी वी. डी. सावरकर की किताब "हिन्दुत्व" लगभग पूरी तरह से माज़नी के प्रभाव में लिखी गयी थी। बताते हैं कि हिटलर ने भी अपने लेख में भारत के आर एस एस की कई बार प्रशंसा की थी। अपनी इसी विरासत के कारण संघ न तो धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करता है और न ही विभिन्न धर्मों के आपसी मेल जोल की कोई बात करता है। जिस तरह से हिटलर ने जर्मनी में यहूदियों के शोषण को सभ्य राष्ट्रवाद से जोड़ा था उसी प्रकार से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भारत में भारतीय मुसलमानों के शोषण को सभ्य राष्ट्रवाद की परिभाषा दी है। इसी सोच को आगे बढ़ाने के लिये उन्होंने नारा दिया था कि हर मुसलमान आतंकवादी नहीं होता, लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान होता है। ये काम बहुत सोची–समझी पॉलिसी और प्रोग्राम के अनुसार चल रहा था लेकिन इसी दौरान कुछ ऐसा हुआ कि आर एस एस बैकफुट पर आ गया और उसकी योजना असफल हो गयी। महाराष्ट्र पुलिस के आला अधिकारी श्री हेमन्त करकरे ने आतंकवादी हमलों के कुछ ऐसे मामलों की जांच शुरू कर दी जिसके बाद संघ से जुड़े कुछ लोग आतंकवादी घटनाओं में दोषी के तौर पर पकड़े गये। अब सबको मालूम है कि संघ से जुड़े कुछ अत्यधिक फ़िरक़ापरस्त लोगों ने मालेगांव, हैदराबाद, अजमेर और समझौता एक्सप्रेस में बम धमाके किये थे। ये बात अब साबित हो गयी है कि आर एस एस का एक ऐसा विभाग है जो आतंकवादी घटनाओं को अन्जाम देता है। इस सबके बाद क्या मैं संघ परिवार के लोगों से पूछ सकता हूं कि ये तो तय है कि हर हिन्दु आतंकवादी नहीं होता लेकिन जो भी आतंकवादी पकड़ा जाता है वो संघ से जुड़ा क्यों होता है? मोदी संघ के नेता रहे हैं। उन्होंने भी इसी फासीवादी

दृष्टिकोण को अपनाया है जिसकी बुनियाद पर संघ की स्थापना हुई थी। गुजरात पुलिस के कई अफ़सरों ने बताया कि गुजरात पुलिस ने नरेन्द्र मोदी को बड़ा बनाने के लिये कई फ़र्ज़ी इन्काउन्टर किये थे। अब सबको मालूम है कि नरेन्द्र मोदी, प्रवीण तोगड़िया और लाल कृष्ण आडवाणी का मुबीना क़त्ल करने आ रहे हैं। जितने भी लोग इन्काउन्टर में मारे गये सब ग़लत था। इस जुर्म की जब ठीक से जांच हुई तो गुजरात पुलिस के कई अधिकारी जेलों में बन्द हैं और कुछ फ़रार हैं। जब से ये लोग जेलों में बन्द हैं, ऐसा एक भी मामला प्रकाश में नहीं आया जहां लोग मोदी की हत्या करने आ रहे हों और मार दिये जायें या पकड़े जायें। क्या जब से ये अधिकारी पकड़े गये हैं तब से उन लोगों की हत्या के इरादे से आने वाले लोगों ने गुजरात जाना बन्द कर दिया है। इशरत जहां के पूरे मामले में कुछ सच्चाईयां सामने लाना ज़रूरी है। इशरत जहां मामले में आई बी के अधिकारी राजेन्द्र कुमार का नाम बार–बार आ रहा है। क्या श्री राजेन्द्र कुमार मिज़ोरम के पूर्व गवर्नर स्वराज कौशल के रक्षा सलाहकार नहीं थे? क्या श्री राजेन्द्र कुमार चन्डीगढ़ में आई बी के डिप्टी डायरेक्टर नहीं थे?जब नरेन्द्र मोदी बीजेपी की ओर से हिमाचल प्रदेश के राष्ट्रीय सचिव थे, क्या कुमार जी की पोस्टिंग मोदी के कहने पर उस समय के गृह मंत्री लाल कृष्ण अडवाणी ने गुजरात में नहीं की थी। इशरत जहां और उनके साथ जिन–जिन लोगों का क़त्ल किया गया था उनके आतंकवादी होने या न होने के बारे में जांच चल रही है लेकिन ये सवाल उठ रहा है कि किस क़ानून के तहत गुजरात पुलिस को उनकी हत्या का अधिकार मिल गया?जब ये साबित हो चुका है कि उन सबको गिरफ़्तार किया गया था तो उन्हें अदालत के सामने क्यों नहीं पेश किया गया। ख़ुद गुजरात हुकूमत के मजिस्ट्रेट एस पी तमान्ग उपलब्ध सबूतों की जांच के आधार पर इशरत जहां के इन्काउन्टर को फ़र्ज़ी पाया था। न्यायालय के आदेश पर जहां इशरत जहां मामले की जांच का काम सी. बी.आई. को दिया गया था। सी.बी.आई ने हाईकोर्ट की निगरानी में उस जांच के काम को पूरा किया। गंभीरता से और बारीकी से जांच करके ही सी.बी.आई. ने अपनी पहली चार्जशीट दाख़िल की है जिसमें गुजरात पुलिस के अधिकारियों के साथ–साथ आई.बी. के ज्वाइन्ट डायरेक्टर राजेन्द्र कुमार के भी साज़िश में शामिल होने का ज़िक्र है। इस सच्चाई से बीजेपी और संघ परिवार क्यों परेशान हैं कि सी.बी.आई. सही काम कर रही है। जब पवन बंसल और नवीन चंदेल के रिश्तेदारों के घरों पर सीबीआई के छापे पड़ रहे थे तब तो बीजेपी के नेता उसकी प्रशंसा कर रहे थे और उसके आधार पर राजनीतिक रोटियां सेंकते थे और जो आंच बीजेपी के नेताओं पर आती है तो सीबीआई के ख़िलाफ़ बयानबाज़ी की जाती है।

ये भी जांच का विषय है कि गुजरात हाईकोर्ट में जिस दिन इशरत जहां का मामला आने वाला था उसके एक दिन पहले एक न्यूज़ चैनल ने एक सीडी को आधार बनाकर इशरत जहां को आतंकवादी साबित करने की मुहिम चला दी। उसी समय आई बी के डायरेक्टर का ख़त भी उस चैनल के एंकर ने दिखाना शुरू कर दिया। मैंने गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे से इस बात की जांच करने की बात की है कि ये पता लगाया जाये कि वो सीडी विश्वस्नीय है या नहीं। ये भी जांच की जाये कि आई बी के डायरेक्टर का ख़त अगर इस तरह से लीक किया गया है तो उसको किसने लीक किया। ये भी समझने का विषय है कि आफ़िशियल सेक्रेट्रेट्स के तहत जांच का विषय बनता है या नहीं।

एन आई ऐ के अनुसार हेडली ने अपने बयान में जो कुछ कहा है उसमें इशरत का नाम नहीं है। अब ये भी खोज का विषय है कि हेडली से पूछताछ करने के लिये जो तीन टीम अमरीका गयी थी उसमें से किसी ने तीसरे दिन ही मीडिया को ये लीक कर दिया कि हेडली ने इशरत जहां का ज़िक्र किया था। इस मामले में ये देखा गया कि आई बी, सीबीआई और एन आई ऐ के उपलब्ध कराये गये हवालों से मीडिया ये रिपोर्ट कर रहा है और कई बात तो असत्य बातें भी रिपोर्ट की जा रही हैं। इन सबूतों के बारे में शासन और प्रशासन को अपना जो दृष्टिकोण अपनाना चाहिये और उनकी हक़ीक़त पर सवाल उठाना चाहिये। मैं मीडिया से और राजनीतिक दलों से अपील करता हूं कि जब तक जांच पूरी न हो जाये तब तक किसी प्रकार से बिना किसी सुबूत के ख़्याली सुबूतों का हवाला देकर किसी भी एक वर्ग विशेष को टारगेट न करें और अगर आप ऐसा करते हैं तो आप भी उसी नज़रिये की सराहना कर रहे होंगे जिसने आज के दौर में हिटलर की राजनीति को सम्मान देने की मुहिम छेड़ रखी है, जिसने महात्मा गांधी की हत्या की थी।

मध्य पूर्व का बदलता राजनीतिक दृष्टिकोण

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मध्य–पूर्व एक ऐसा क्षेत्र है जिसे दुनिया की छत भी कहा जाता है। ये तीन महाद्वीपों एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप का संगम है। इसीलिये इसको ख़ास व्यापारिक महत्व प्राप्त है। विभिन्न धर्मों का केन्द्र होने की वजह से उसका धार्मिक इतिहास भी बहुत उज्जवल है। दुनिया के तीन बड़े धर्म यहूदी, ईसाई और मुसलमान ये समझते हैं कि इस क्षेत्र पर इनका एतिहासिक और धार्मिक अधिकार है। यही कारण है कि धर्म के नाम पर जितना ख़ून इस क्षेत्र में बहाया गया है उतना दुनिया के किसी भी क्षेत्र में नहीं बहाया गया। यहूदियों ने तौरात के हवाले से और ईसाईयों ने अपने पेशवाओं के हवाले से ये यक़ीन रखते हैं कि मध्य पूर्व पर कन्ट्रोल करने वाला पूरी दुनिया पर राज करेगा और मुसलमानों का भी यही मानना है कि इमाम मेंहदी का अवतरण भी इसी इलाक़े में होगा। यही अक़ीदा शियों का भी है जिनको बेसब्री से अपने आख़िरी इमाम के आने का इन्तिज़ार है। शियों का अक़ीदा है कि इमामे ग़ायब के ज़ाहिर होने के बाद उनको पूरी दुनिया पर शासन करने का अधिकार मिल जायेगा और वो दुनिया की सारी क़ौमों और ख़ास कर सही अक़ीदा रखने वाले मुसलमानों का दुनिया से सफ़ाया कर सकेंगे। यही कारण है कि मध्यपूर्व की वर्तमान भयावह स्थिति के पीछे यहूदी और ईसाई ग़रज़ों के साथ शियों के भी नापाक इरादे शामिल हैं। सियासी एतबार से मध्यपूर्व का क्षेत्र दो ब्लाक में बटा हुआ है। एक पूंजीवाद जिसका नेतृत्व अमरीका के हाथों में है और दूसरे प्रदर्शनकारी हैं जहां नेतृत्व का संकट है। अमरीका चूंकि सीधे यहां पर प्रभाव नहीं डाल सकता इसलिये उसके मित्र देश अपनी वफ़ादारी का पूरा सबूत दे रहे हैं, बदक़िस्मती से उन "वफ़ादारों" में मुस्लिम देश भी शामिल हैं।

मिस्र व सीरिया दो ऐसे देश हैं जो पिछले कई महीनों से साम्राज्य की भड़काई हुई आग में झुलस रहे हैं। कहीं वर्दी और कहीं बिना वर्दी ताक़त व क्षमता रखने वाले तत्व अपने निहत्थे, मासूम और बेगुनाह नागरिकों पर जुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ रहे हैं। जिनको आधार बनाकर अन्तर्राष्ट्रीय व पूंजीवादी ताक़तें अपना राजनीतिक लाभ प्राप्त करना चाहती हैं। इससे पहले ईराक़, लीबिया और उससे पहले बोस्निया, चेचेन्या और अफ़ग़ानिस्तान के मुसलमान जुर्म ज़ईफ़ी की सज़ा भुगत रहे हैं। अब मिस्र व सीरिया के मुसलमान अपने ही शासकों के जुल्म का शिकार हैं और पश्चिमी ताक़तें अपना लाभ उठाने में व्यस्त हैं।

अमरीका जो ख़ुद को दुनिया का गाडफ़ादर समझता है अपनी सारी मक्कारियों व मुनाफ़िक़ाना चालों के साथ क्रियान्वित है। सीरिया की जनता पर रसायनिक गैस का प्रयोग हुआ और उसी को बहाना बनाकर वह सीरिया के ख़िलाफ़ सैन्य कार्यवाही करना चाहता है। ठीक उसी तरह जिस तरह उसने रसायनिक हथियारों कहा बहाना बनाकर इराक़ के ख़िलाफ़ और ओसामा के नाम पर अफ़ग़ानिस्तान को तहस–नहस किया था। दूसरी ओर रूस ने सीरिया की हिमायत और सऊदी अरब पर हमले की धमकी भी दे दी है। ये स्थिति यक़ीनन विश्वयुद्ध का इशारा देती है लेकिन यहां के मुसलमान जंग से पहले ही जंग के मैदान में घिरे हुए हैं और उनके सुबह व शाम बारूद की चादरों पर गुज़र रहे हैं।

मध्य–पूर्व की स्थिति को समझने के लिये अतीत का अध्ययन भी आवश्यक है। 1967ई0 में जब अरब देशों और इस्राईल में जंग हुई थी तो उस समय इस्राईल ने गोलान की पहाड़ियों पर क़ब्ज़ा कर लिया था। इस युद्ध में मिस्र की सेना ने मुख्य भूमिका निभायी थी। इसलिये इस्राईल किसी भी तरह मिस्र में राजनीतिक स्थिरता के पक्ष में नही है। अरब देशों के बीच में इस्राईल का "अज़ीम इस्राईल" बनना उसी समय संभव हो सकता है जब उसको अपने चारों ओर से पूरा इत्मिनान हो। इसीलिये इस्राईल की सुरक्षा अमरीका के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि अमरीका में

जब भी कोई नया राष्ट्रपति आता है तो वो अपने मन्शूर में फ़िलिस्तीन के मसले को बहुत अहमियत देता है और इस तरह वो अरब देशों की हमदर्दियां भी हासिल कर लेता है, जबकि दुनिया जानती है कि फ़िलिस्तीन का मसला उसी वक़्त हल हो सकता है जब इस्राईल सन् 1967 ई0 की पोज़ीशन में दोबारा जाने को राज़ी हो और ये इसलिये मुमकिन नहीं कि इस्राईल की योजना पूरे मध्य–पूर्व पर क़ब्ज़ा करने की है। क्योंकि इस्राईल को अज़ीम इस्राईल (ळतमंजमत ैतमंस) बनना और पूरी दुनिया पर शासन करना है। इस वक़्त इस्राईल को अपनी कामयाबी इसी में नज़र आ रही है कि सीरिया के गृहयुद्ध का पूरा फ़ायदा उठाया जाये और अमरीका को हमलों के लिये मजबूर किया जाये, क्योंकि इसी बहाने इसे गोलान की पहाड़ियों में और तौसीअ करने का मौक़ा मिलेगा।

सीरिया में लम्बे अर्से से आन्तरिक विवाद उत्पन्न है। इसके अलावा पचास–साठ साल से असद ख़ानदान भी अपनी ज़ुल्म व बरबरयित के साथ काबिज़ है। लेकिन सीरिया के शासकों ने त्यूनिस, अलजज़ायर और इराक़ के हश्र से भी कोई सबक़ नहीं सीखा, बल्कि बदक़िस्मती की बात ये है कि मुस्लिम शासक शासन पर क़ाबिज़ रहने के लिये अपनी ही जनता के क़त्ल की इन्तिहा तक पहुंच जाते हैं और ऐसे शासकों को पूंजीवादी ताक़तें अपना हथियार बनाती हैं। यही स्थिति सीरिया में भी है। पूरे अरब में क्रान्ति की एक लहर चली जिसने पूंजीवादी ताक़तों के ज़हनी ग़ुलाम शासको का तख़्ता उलट दिया लेकिन इस्लामी दुनिया को एक बार फिर बिखेरनी की कोशिशें की जा रही हैं।

मिस्र में इख़्वान (बद्रहुड) की हुकूमत जनता की मर्ज़ी से स्थापित हुई थी। मिस्रियों ने इख़्वान को वोट दिया था और किसी को ये हक़ नहीं पहुंचता कि जनता की चुनी सरकार को बेदख़ल करने की कोशिश की जाये। जबकि मिस्री राष्ट्रपति ने सत्ता में आने के बाद ईसाईयों और दूसरे वर्ग से बेहतर संबंध स्थापित करने की कोशिश की। ख़ुद डाक्टर मुर्सी ने एक ईसाई उपराष्ट्रपति को भी अपने साथ रखा। लेकिन उसके बावजूद भी उनकी हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी है। इख़्वानी शासकों को गिरफ़्तार किया जा रहा है और उसके हामियों पर बिना रोक–टोक गोलियां चलायी जा रही हैं। ख़ुद मुसलमानों के हाथों मुसलमानों की ज़िन्दगियां तबाह और इज़्ज़तें तार–तार हो रही हैं। मुर्सी हुकूमत को सत्ता से बेदख़ल कर दिया गया और हुस्नी मुबारक जैसे वक़्त के फ़िरऔन को जेल से बाहर निकाल कर "नज़रबन्दी" के नाम पर सिक्योरिटी उपलब्ध करा दी गयी है। ये मिस्र की उन रूहों पर भी ज़ुल्म है जो हुस्नी मुबारक के ज़ुल्म के सामने खड़ी हो गयीं थीं और अपनी जानें इस उम्मीद में क़ुर्बान कर दीं थीं कि आने वाला भविष्य उनकी नस्लों को स्वतन्त्र देश में सांस लेने का हक़ देगा। लेकिन आज उनकी क़ुर्बानी व्यर्थ हो गयीं और जिन्हें स्वतन्त्र देश में सांस लेने का मौक़ा मिला और जो इस्लाम के मज़बूत निज़ाम और उसके पुर अमन साया तले पहुंच सके उन्हें भी उनकी अपनी मिस्री फ़ौज जीने का अधिकार नहीं देना चाहती। हक़ीक़त ये है कि इन्क़लाब की आंधी ने हुस्नी मुबारक के क़दम ज़रूर उखाड़ दिये थे लेकिन उसकी जड़े जो शासन के दूसरे हिस्सों और देश की व्यवस्था पेवस्त थीं उनको हिला न सकीं और पूंजीवादी शासन उनकी जड़ों को सींचते रहे, और अपने उद्देश्य के लिये तैयार करती रहीं और आज उन्हीं के द्वारा पूरे देश को गृहयुद्ध की भट्टी में झोंक दिया गया है।

मध्य–पूर्व में राजनीतिक संकट के हल की कोशिशें अगर नाकाम होती हैं तो आने वाले दिनों में स्थिति क़त्ल व लूटपाट की हो सकती है और इसका सबसे ज़्यादा असर फ़िलिस्तीन पर पड़ेगा। सीरिया के हल के लिये इस्लामी दुनिया और ख़ासकर अरब लीग को प्रभावपूर्ण भूमिका निभाना चाहिये थी। लेकिन अब तक किसी प्रभावित क़दम न उठाये जाने के कारण से भविष्य के हालात अन्धकार में ही नज़र आते हैं।

मिस्र में शांति स्थापना का एक रास्ता है और वो है केन्द्रीय किरदारों के बीच बातचीत और सुलह का अमल। क्योंकि इख़्वानी प्रदर्शनकारियों के ख़िलाफ़ सैन्य कार्यवाहियों से कोई हल निकलने के बजाये हालात और बदतर होते चले गये हैं और उनका जोश ख़त्म होने के बजाये बढ़ ही रहा है और उन्हें पूरी दुनिया के मुसलमानों की हिमायत हासिल है और हुस्नी मुबारक की रिहाई के बाद मिस्र के ग़ैरइस्लामी वर्ग की हिमायत भी इख़्वानियों के हक़ में बढ़ती जा रही है। इससे उम्मदी है कि जल्दी ही मिस्र में अमन का माहौल होगा और इख़्वानी दोबारा सत्ता में आकर इन्साफ़ व न्याय की मिसाल क़ायम करेंगे।

इरशादात जीलानी रह०

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह0)

इस्लाम की तारीख़ में पांचवी सदी इस हैसियत से बड़ी मुबारक थी कि इसमें एक बड़ी हस्ती पैदा हुई, वो हस्ती सैय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 की ज़ात गिरामी है। आप ग्यारह रबीउस्सानी 470 हि0 सन् में पैदा हुए। अल्लाह ने आपकी नज़र में बड़ी ताक़त और आप की ज़बान में अजीब तासीर अता की थी। आपकी तवज्जो बहुत असरदार थी। आप जिसकी तरफ़ तवज्जो करते वो सोना बन जाता, अगर सरकश होता तो बुज़ुर्ग बन जाता।

आपके हाथ पर लाखों आदमियों ने तौबा की। आपकी कोई ऐसी मजलिस न होती जिसमें यहूदी और ईसाई मुसलमान न होते, लाखों के अक़ीदे दुरुस्त होए। एक बार खुद फ़रमाया कि मेरे हाथ पर पांच हज़ार से ज़्यादा यहूदी और ईसाई मुसलमान हो चुके हैं और मुजरिमों मे से एक लाख लोगों से ज़्यादा तौबा कर चुके हैं। ये अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है।

आपकी नसीहत इतनी असरदार होती कि सारा बग़दाद टूट पड़ता। आपकी नसीहत से बिदअत का बाज़ार ठन्डा पड़ गया था और हर तरफ़ सुन्नत का रिवाज हो गया था, क्या आम और क्या ख़ास सबके सब आपसे प्रभावित थे।

आपकी नसीहतों और इरशादों से मुस्तनद और सही किताबें भरी हैं। इतनी छोटी सी जगह में हम कुछ इरशाद लिखते हैं।

आपने एक मजलिस में फ़रमायाः सारी मख़लूक़ आजिज़ है, न कोई तुझ को फ़ाएदा पहुंचा सकता है न नुक़सान, बस अल्लाह तआला इसको उनके हाथों करा देता है। आगे चलकर फ़रमायाः बहादुर वही है जिसने अपने दिल को अल्लाह के अलावा (हर मख़लूक़) से पाक बनाया और दिल के दरवाज़े पर तौहीद व शरीअत की तलवार लेकर खड़ा हो गया कि मख़लूक में से किसी को भी इसमें दाख़िल नही होने देता, अपने दिल को दिल के फेरने वाले से जोड़ता है, शरीअत उसके ज़ाहिर को संवारती है और तौहीद व मारफ़त उसके बातिन को दुरुस्त करती है। एक नसीहत में फ़रमाते हैंः

तेरा दिल किस क़दर सख़्त है! कुत्ता भी शिकार करने और खेती और मवेशी की निगेहबानी और मालिक की हिफ़ाज़त करने में अपने मालिक की भलाई करता है और उसे देखकर (खुशी के मारे) उछलता कूदता है। हालांकि वो उसको शाम के वक़्त सिर्फ़ दो निवाले या ज़रा सी मात्रा में खाना दे देता है। और तू हर वक़्त अल्लाह की तरह–तरह की नेमतों से फ़ाएदा उठाता है मगर नेमतों के देने से जो उसका मक़सूद है, न तो उसको पूरा करता है और न उसका हक़ अदा करता है (बल्कि उसके उल्टे) उसका हुक्म रद्द कर देता है और उसकी हद व शरीअत की हिफ़ाज़त नही करता।

जब आप लाखों इन्सानों को ईमान के नूर से मुनव्वर फ़रमा कर इस दुनिया से जाने लगे और मौत के मर्ज़ में गिरफ़्तार हुए तो अपने बेटे शेख़ अब्दुल वहाब को जो वसीयत की वो भी सुनिये, फ़रमायाः

हमेशा खुदा से डरते रहो और खुदा के सिवा किसी से न डरो और न उसके सिवा किसी से उम्मीद रखो और अपनी सभी ज़रूरतें अल्लाह के सुपुर्द करो, सिर्फ़ उसी पर भरोसा करो और सब कुछ उसी से मांगो, तौहीद अपनाओ कि तौहीद पर सबको इत्तेफ़ाक़ है।

जब आख़िर वक़्त हुआ तो फ़रमाया "मैं उस खुदा से मदद चाहता हूं जिसके सिवा कोई माबूद नही, वो पाक और बरतर है और ज़िन्दा है जिसे फ़ौत होने का अन्देशा नही, पाक है वो जिसने अपनी कुदरत से इज़्ज़त ज़ाहिर की और मौत से बन्दों पर ग़लबा दिखाया, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, मुहम्मद स0अ0 खुदा के आख़िरी रसूल हैं।" ज़बान मुबारक से तीन बार अल्लाह, अल्लाह, अल्लाह निकला और रूह परवाज़ कर गयी। वफ़ात 561 हिजरी सन् मे हुई, उस वक़्त उम्र शरीफ़ 90 साल की थी। आपने अपने बाद बेशुमार ख़लीफ़ा छोड़े, जिन्होने लाखों की ज़िन्दगियां बना दीं और दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईमान और यक़ीन के चराग़ जला दिये, लेकिन अफ़सोस है कि हमारे बहुत से भाई और बहनें शिर्क और बिदअत में मुब्तला हैं और आपकी तरफ़ बहुत सी खुराफ़ात की बातें मन्सूब करते हैं, मगर आपकी सही तालीमात, इरशादात और आपकी नूरानी ज़िन्दगी अपने सामने रखें तो शिर्क और बिदअत जैसी क़ाबिले नफ़रत चीज़ों से दूर रह सकते हैं और अपनी ज़िन्दगी भी पाकीज़ा बना सकते हैं।

ब्याजी ऋण

"ऋण विशेषकर विदेशी ऋण, वास्तव में किसी सरकार की ओर से प्रचलित एक हुण्डी होती है। जिसमें ऋण की राशि ब्याज के साथ अदा करने की ज़िम्मेदारी स्वीकार कर ली जाती है। अगर ब्याज की दर 5 प्रतिशत है तो ऋणी सरकार 20 वर्ष की अवधि में मूलधन के बराबर केवल ब्याज ही अदा करती है। 40 वर्ष में यह राशि दोगुना और 60 वर्ष में तीनगुना हो जाती है। फिर भी मूल ऋण सिर पर ही रहता है।

इससे स्पष्ट होता है कि इस ऋण से सम्बन्धित सरकार अपनी निर्धन जनता पर कर इसलिए लगाती है कि वह उन विदेशी दौलतमन्दों से अपना हिसाब–किताब बराबर कर सकें। जिनसे उसने ऋण लिया होतो है, इन ऋणों केलिए अपनी जनता पर प्रतिव्यक्ति कर लगाकर उनसे अन्तिम सिक्के भी निकलवा लेती है। जबकि अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए यही सिक्के इक्ठ्ठा करके ऋण से बचा जा सकता था।

प्रतिद्वन्दी यहूदियों की निर्मल व असभ्य मानसिकताओं और अशिष्ट विचारों का प्रकट होना इस अभियोग से भी होता है कि वह ऋणों को उतारने के लिए हम ही से ब्याजी ऋण ले रहे हैं। परन्तु उन्होने यह कभी नही सोचा कि हमारा हिसाब–किताब चुकाने के लिए उन्हे अपने साधनों से वंछित राशि पैदा करनी चाहिए। इससे अधिक सरल काम और क्या हो सकता है कि उन्हे अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए यह राशि अपनी ही जनता से लेनी चाहिए। परन्तु यह हमारे बुद्धिमान मार्गदर्शकों का कमाल है कि उन्होने ऋणों के लेन–देन को उनके समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया कि उन्हे इसमें लाभ दिखाई देता है।"

(यहूदी प्रोटोकाल से लिया गया।)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-05

September 2013

ISSUE-04

CONTACT: SAYYID AHMAD SHAHEED ACADEMY
MOBILE: 9918385097

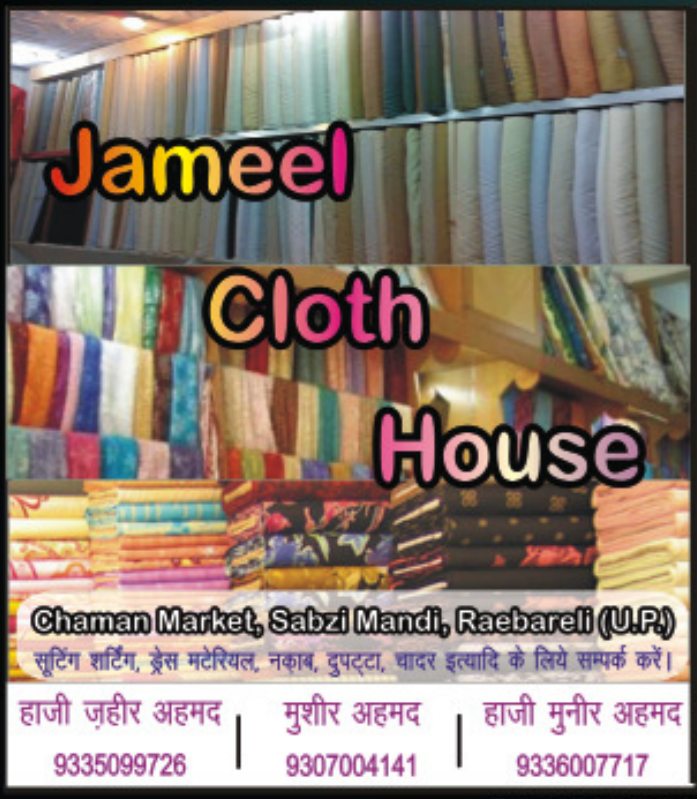

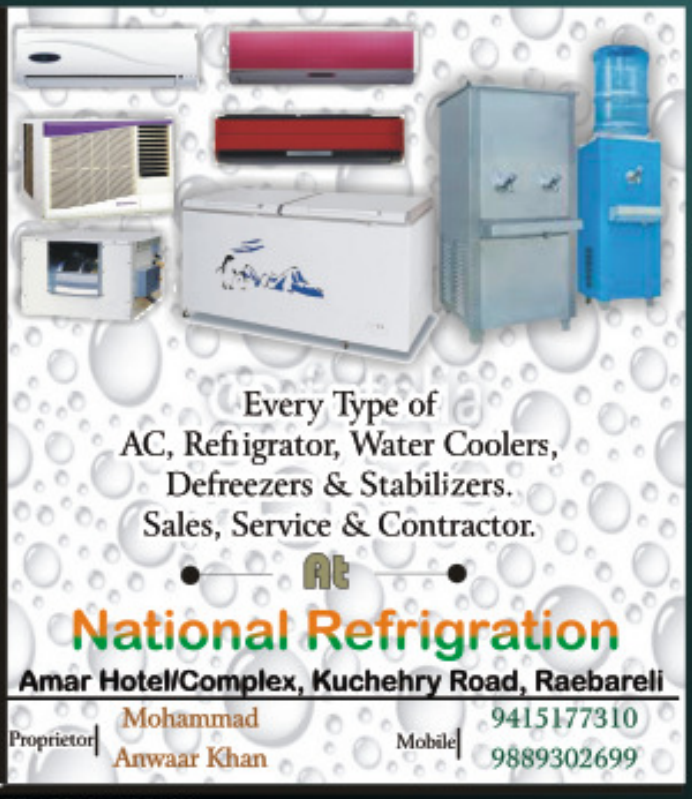

Designed by Mohammad Makky Hasani Nadvi

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.